करुणा रेकी

संतो की कृपा सबके लिए

प्रथम एवं द्वितीय स्तर
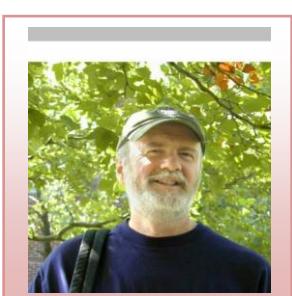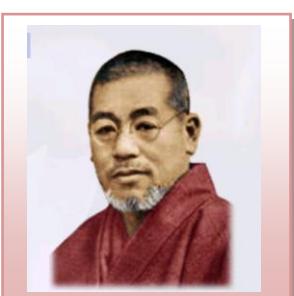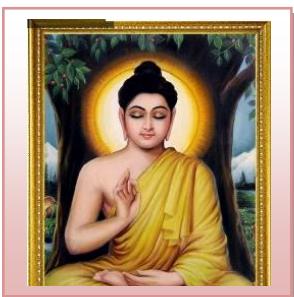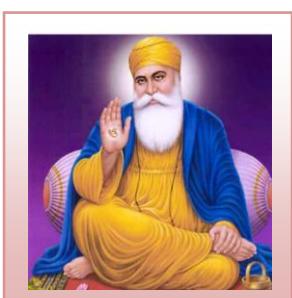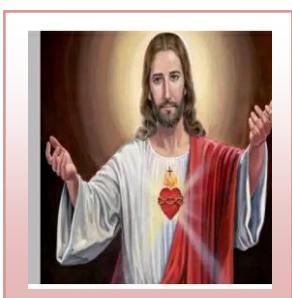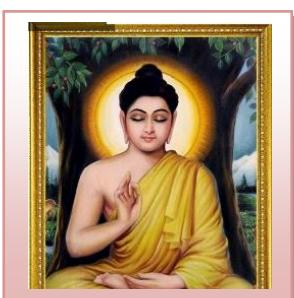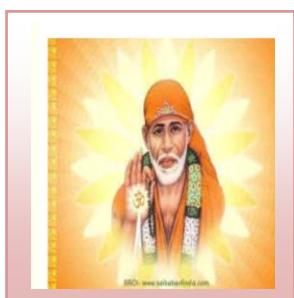
Shanker Purswani

Reiki & Karuna Reiki Teacher

Call: +919414850943

आवश्यक सूचना

इस पुस्तक को पढ़ने मात्र से आप करुणा रेकी हीलर नहीं बन सकते। करुणा रेकी हीलर बनने के लिये करुणा रेकी शिक्षक से करुणा रेकी शक्तिपात लेना परम आवश्यक है। इस पुस्तक को पढ़ते समय अग्रलिखित बिंदुओ का संज्ञान लें।

1. करुणा रेकी एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धती है यह प्रशिक्षार्थी को किसी भी प्रकार की पांरपरिक चिकित्सा करने का अधिकार नहीं देती है।

2.यदि आप पंजिकृत चिकित्सक नहीं है तो आप किसी भी तरह की रोग की जांच नहीं करा सकते हैं, यदि ऐसा करते हैं तो इसकी सारी जिम्मेदारी आपकी होगी रेकी संस्थान एवं लेखक उत्तरदायी नहीं होगा।

3.आप पुस्तक को पढ़ कर स्वयं की अथवा किसी भी रोगी की चल रही दवाईयों को बंद अथवा चालू नहीं करेगें और ऐसा करते हैं तो इसमें लेखक का किसी भी प्रकार का उतरदायित्व नहीं होगा।

4.गंभीर रोग जिसमें गहन चिकित्सा यां ऑपरेशन की जरुरत होती है ऐसे रोगियों का उपचार करने की सलाह यह पुस्तक एवं लेखक नहीं देता है।

5.मूलतः करुणा रेकी मन,शरीर एवं आत्मा के विकास के लिए बनाई गई एक जीवन पद्धती है। इसको करने से स्वास्थ्य लाभ होते देखा गया है किन्तु यह किसी भी प्रकार से पारंपरिक चिकित्सा के स्थापन्न के रूप में स्वयं को पेश नहीं करती है।

6. करुणा रेकी सेमीनार में आपको करुणा रेकी की जानकारी दी जाती है,शक्तिपात के माध्यम से आप करुणा रेकी का अनुभव करते हैं। सिर्फ करुणा रेकी सेमीनार में भाग लेने से आप एक सफल करुणा रेकी हीलर नहीं बन जाते इसके लिए आपका अभ्यास परम् आवश्यक है।

7.एक बार जमा कराया हुआ प्रशिक्षण शुल्क किसी भी सूरते हाल में वापस नही लौटाया जाएगा।

8. करुणा रेकी के संबध में किसी भी तरह का कानूनी वाद स्वीकार नहीं किया जाएगा।

9.सेमीनार का यह शुल्क एक बार के लिए ही है। अगर आप दुबारा इस कोर्स की पुनरावृत्ती करना चाहें तो इसके लिए कोर्स का 50 प्रतिशत शुल्क फिर से देना होगा।

10. करुणा रेकी भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। इसकी जानकारी आपको दे दी गई है।

अनुक्रमणिका

ऊसुई रेकी प्रणाली की यह एक विकसित तकनीक है। इस रेकी प्रणाली में भी सिंबल से प्रशिक्षार्थियों को एट्यून किया जाता है।

करूणा रेकी को वर्ष 1993 में रेकी प्रशिक्षण केन्द्र मिशिगन, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में अनेक उच्च कोटि के आध्यात्मिक व्यक्तियों एवं रेकी मास्टर जैसी मर्सीकिलर, मेली–रे–मरीने, पेट कर्टन, केथरिन मिल्से, बेला माउन्ट, मरला, एब्राहम, मार्दू एब्राहम, और विलियम ली रेन्ड (आस्ट्रेलिया) एवं अन्य ब्रह्म ज्ञानियों ने मानवता के कष्ट निवारण निमित्त विकसित किया।

करूणा एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग प्रमुख धर्मों हिन्दु, बौद्ध एवं जैन आदि में किसी के प्रति हृदय से प्यार एवं ममता के लिये दर्शाता है । कुछ विशेष उच्च शक्तियाँ लगातार अपनी करूणा कष्ट में पड़े व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहती है, परन्तु इस करूणारूपी उपचार को ग्रहण करने का विकल्प उपलब्ध नहीं रहने के कारण उन उच्च शक्तियों का यह करूणामय उपचार वांछित लोगों तक नहीं पहुँच पा रहा था। अतएवं लगातार अर्न्तमुखी होकर अन्तरज्ञान से युक्त ज्ञानियों एवं रेकी शिक्षकों ने यह पद्धति विकसित की है, करूणा रेकी के सभी सिंबल इतने शक्तिशाली हैं कि कुछ देर तक उपयोग करने पर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होता है, इस पद्धति की विशेषता यह है कि मानवता के हर प्रकार के कष्ट एवं उलझनों के लिये अलग–अलग विशिष्ट परन्तु अत्यन्त आसान सिंबल हैं, जिन्हें कोई भी सीख सकता है। सिंबल के नाम भी अत्यन्त आसान और सरल हैं।

करूणा रेकी के मूल तत्व

1. प्यार, सत्य खूबसूरती और समरूपता ।
2. पिछले जन्मों के कर्मबन्धनों से मुक्ति ।
3. क्रूरता एवं नकारात्मकता से मुक्ति ।
4. उच्च आध्यात्मिक चेतना की जागृति ।
5. सम्पन्नता एवं सुरक्षा।
6. उच्च चक्रों का पृथ्वी तत्व से संतुलन ।
7. ज्ञान चक्षुओं को जागृत कर ज्ञानियों से सम्पर्क।
8. धरती से कष्टों को समाप्त करने के प्रयास में उच्च शक्तियों को प्रोत्साहन।

करूणा संस्कृत का शब्द है एवं हिन्दुओं, बौद्ध एवं जैन धर्मों में प्रयुक्त होता है । सभी व्यक्ति एक ही ईश्वर की देन है ।

करूणा प्रदर्शित करना मानवीय प्रक्रिया है, हम सभी एक है अतः करूणा को प्रत्येक जीव तक बाँटना अर्थात् प्रत्येक के प्रति करूणा भाव दर्शाना मानव का कर्तव्य है। जब हम दूसरों के कष्टों को दूर करने हेतु उनकी मदद करते हैं, तो उससे सभी जीव लाभांवित होते हैं । हम सब एक हैं उसका तात्पर्य यह है कि परस्पर प्रेम के द्वारा हम करूणा को न केवल अन्य जीवों तक सम्प्रेषित कर सकते हैं वरन् यह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि सहानुभूति/करूणा बड़े–बड़े रोगों के निवारण में राम बाण का कार्य करती है। बुद्धिज्म में भी यही वर्णित है कि जब तक आप स्वयं के प्रति दयालु नहीं

होंगे तब तक आप दूसरों के कष्टों को दूर करने के प्रति सहृदय नहीं हो सकते । अतः करूणा के साथ प्रार्थना एवं बुद्धिमानी जुड़ी हुई है ।

इस धरती पर प्रत्येक जीव को करूणा के पाठ से सहृदय बनाने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। करूणा रेकी के द्वारा दूसरों के कष्टों को दूर करने में असीमित मात्रा में ऊर्जा को दूसरों तक सम्प्रेषित किया जा सकता है । जब आपके हृदय में करूणा का संचार होगा तो न केवल आप दूसरों को मदद करेंगे वरन अन्य को सहृदय/संवेदनशील बनाने में सहायक होंगे अतः उनके कष्ट त्वरित गति से दूर होने में मदद मिलेगी ।

श्री विलियम एवं अन्य के द्वारा रेकी में करूणा भाव विकसित किया गया । रेकी के कुछ अन्य मास्टरों द्वारा इस करूणा भाव सिंबल को आगे बढ़ाया गया । मरसी मिलर, मेली–रे, पेट कोर्ट ने, मेरीन, केथरिन मिल्स, बेलामोन्ट एवं अब्राहम, विलियम सहित रेकी के मास्टरों ने इस सिंबल का महत्व समझा एवं इस प्रयोग में लाये । उन्होंने महसूस किया कि करूणा में मानव कष्ट दूर करने की ज्यादा शक्ति है तथा यह उनके रोगों को दूर करने में प्रभावी उपचार का कार्य करती है। उन्होंने इसे करूणा रेकी नाम दिया । करूणा रेकी में अन्य प्रतीकों का भी प्रयोग किया किन्तु उन्होंने उनमें ज्यादा प्रभाव नहीं पाया । मनुष्यों के कष्टों को दूर करने में करूणा व्यवस्था ज्यादा सहायक है यह उनका दृष्टिकोण था ।

उसुई रेकी से करूणा रेकी भिन्न है अनेक रेकी माध्यमों ने इसे उसुई रेकी की तुलना में ज्यादा शक्तिषाली पाया है एक ही समय में सम्पूर्ण शरीर को ऊर्जा के क्रम में इस ऊर्जा का स्पन्दन ज्यादा प्रभावी है । शारीरिक ऊर्जा के

बजाय इस ऊर्जा की तेजस्विता ज्यादा प्रभावी है, यह विद्यार्थियों का अनुभव रहा है। जो लोग करूणा रेकी की शक्ति प्राप्त करते हैं उनका यह अनुभव है कि करूणा रेकी के उपचार के दौरान रेकी गाईड, देवदूत या किसी उच्च शक्ति की उपस्थिति का भान होता है जो रेकी उपचार में उन्हें अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं। करूणा रेकी के सिंबल अपने–अपने क्षेत्र में अत्यन्त शक्तिशाली हैं। मान्यताओं के अनुसार दिव्य शक्ति (मिस्टिक पॉवर) के तीन रूप हैं– तंत्र, मंत्र और यंत्र रेकी के सिंबल तंत्र शक्ति पर आधारित हैं। इस शक्ति को प्राप्त कर इसका उपयोग किसी को क्षति पहुँचाने के लिये नही कर सकते हैं और अगर इसके बावजूद भी करते हैं तो स्वयं इस शक्ति को क्षति पहुँचती है।

जैसा कि नाम से लगता है करूणा का अर्थ है मन में ऐसा निश्छल प्यार, ममता, अपनापन, हो कि किसी को कष्ट में देखकर दिल भर आये और दिल से करूणा प्रवाहित होने लगे । करूणा का सिद्धान्त सभी से समभाव एवं प्यार, निश्छल प्यार का दिल से अपने आप प्रवाह जिसके लिये कोई प्रयास नहीं करना पड़े जैसे पक्षी अपने आप उड़ता है, हवा अपने आप बहती है, मछली अपने आप तैरती है, यह उनकी प्रकृति है, इसी प्रकार करूणा और ममता प्राकृतिक होने चाहिये, जहाँ उनके लिए प्रयास करना पड़े वह बनावटी हो जायेगी प्रकृति स्वयं अपने कार्य करती है, ऋतुएं अपने आप बदलती रहती है सूर्य उदय अपने आप होता है , पृथ्वी अपनी धुरी पर स्वतः ही घुमती रहती है तथा दिन और रात्रि अपने आप होते हैं उसी प्रकार करूणा एंव ममता का प्रवाह अपने आप होना चाहिये अपने आप/स्वतः ।

हम सभी अपने अपने कर्मों से बंधे हैं, अपने प्रत्येक कार्य में हम कोई न कोई कर्म कर रहें हैं । हमारे प्रत्येक कार्य से एक प्रकार की ऊर्जा तैयार होती है और जैसी ऊर्जा हम तैयार करेंगे, वैसी ही ऊर्जा हमारे पास वापस लौटेगी । कहते हैं कि जैसा हम बोयेंगे वैसा ही काटेंगे बबूल का बीज देखने में और छुने में बहुत अच्छा लगता है, रोंयेदार मुलायम, लेकिन उसका वृक्ष काँटेदार होता है । अगर हम ऐसा कार्य चुनते हैं जिससे दूसरों को प्रसन्नता, आनन्द, ज्ञान एवं सफलता का बोध हो तो अपने ही लिए इन सभी का बीजारोपण करते हैं, निश्चित रूप से हमें प्रसन्नता, आनन्द, ज्ञान एवं सफलता की प्राप्ति होगी, अगर हम दूसरों के लिए दुःख, दर्द, कष्ट, परेशानी, तकलीफ असफलता, धन की क्षति या ऐसे ही नकारात्मक कार्य करते हैं तो अपने लिए भी इन्हीं को आमंत्रित कर रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति का अपना कर्म एवं संस्कार होता है जिसके अनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होता रहती है, इसके लिए अगले जन्म की प्रतीक्षा नहीं करती पड़ती है । स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि हमारे विचार शब्द और कार्य उस जाल के धागे हैं जिसे बुनकर अपने चारों ओर डाल रहे हैं।

हमारे अर्न्तमन में हमेशा यह आवाज उठती रहती है कि यह कार्य उचित है या अनुचित ? अगर हम कोई ऐसा कार्य करने जा रहे हैं जिसके लिए हमारा अन्तर्मन मना करता है फिर भी हम उसे करते हैं तो यह संभव है कि उस कार्य से क्षणिक प्रसन्नता प्राप्त हो जाए परन्तु वह वास्तविक प्रसन्नता नहीं होती है और जब हम लगातार अपने अन्तः करण से उठने वाली आवाज के विरूद्ध कार्य करते रहते हैं तो धीरे धीरे अन्तःकरण से उठने वाली, हमें सावधान करने वाली आवाज कमजोर पड़ने लगती है और तब हमें भले बुरे का

ज्ञान कम होने लगता है और बुराई की ओर जल्दी जल्दी कदम बढ़ने लगते हैं । ये कदम तो वापस नहीं होंगे परन्तु जिस बुराई का हम लगातार बीजारोपण कर रहे हैं उसका फल चखने से हमें कोई नहीं रोक सकेगा। अगर आपको कभी यह शंका हो गई है कि अमुख कार्य अनुचित है तो चैतन्य भाव से अपने हृदय चक्र पर ध्यान लगायें और उससे पूछें कि हमें क्या करना चाहिये। कुछ ही क्षण में आपको कोई न कोई संवेदना महसूस होगी, हो सकता है यह बहुत हल्की हो पर आप ध्यान लगाईये, आप अवश्य महसूस करेंगे तभी उसके अनुसार कार्य होगा। हमारे हृदय चक्र के पास हर बात का सही उत्तर है। हृदय चक्र मात्र सुख–दुःख का बोध नहीं कराता है बल्कि उसमें अन्तरज्ञान है, वह सम्पूर्ण है, हमारा हृदय निश्छल है उसमें कोई प्रपंच नहीं है, कोई छल नहीं है परतु व्यक्ति अपनी विचार धाराओं के कारण हृदय को छल एवं प्रपंच से भर देता है।

रेकी में हृदय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है अगर हृदय में तरह –तरह के छल प्रपंच भरे हैं तो रेकी प्रवाह पर अत्यन्त प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। जब आप किसी व्यक्ति से या किसी परिस्थिति से क्षुब्ध या दुखी होते हैं और आपके हृदय में कोई प्रतिक्रिया होती है तो यह प्रतिक्रिया उस व्यक्ति या परिस्थिति के विरूद्ध नहीं होती है बल्कि वह वास्तव में आपके हृदय में उठने वाली भावनाओं के विरूद्ध होती है । यह आपकी अपनी मनोभावना ही है किसी और की नहीं और इसके लिए आप स्वयं जिम्मेदार हैं और जैसे ही आप अपनी मनोकामना को पहचान लेंते हैं वैसे ही उसके लिए स्वयं अपने ऊपर जिम्मेदारी ले लेते हैं,परन्तु कठिनाई यह है कि हम किसी अप्रिय बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। एक उदाहरण लें, पिता यह समझता

है कि उसका अपना बेटा नालायक निकल गया है ,गलत संगत में रहता है, हिसाब–किताब में गड़बड़ी करता है, झूठ बोलता है उस पुत्र के प्रति पिता का मन क्रोध से भरा रहता है । यहाँ यह स्पष्ट है कि पुत्र के कार्य–कलाप के कारण जो परिस्थिति उत्पन्न हो रही है उसके कारण पिता क्षुब्ध /दुखी रहते हैं। इस समस्या का निदान अत्यन्त सहज है अगर पिता यह स्वीकार करे कि ठीक है कुछ भी हो है तो यह मेरा पुत्र यदि बचपन से हम इसके प्रति सतर्क करते है, अच्छे संस्कार देते, उसके साथ नित्य समझाईश हुई होती जैसे ही इस तथ्य को पिता स्वीकार करते हैं वैसे ही उनकी प्रति क्रिया समाप्त हो जाती है और वे अपनी उस कमी को पूरा करने का प्रयास करने लगते हैं । गलती जो पूर्व में उनसे हो चुकी है उसके सुधार से उनके हृदय में पुत्र के प्रति करूणा एवं ममता का संचार होगा। जीवन में जो जिम्मेदारी की बात समझ में आने लगे तो आप किसी भी प्रतिकूल घटना या परिस्थति के लिए किसी अन्य व्यक्ति या स्वयं को दोष नहीं देंगे ना ही स्वयं को दोष बोध होगा । जो नकारात्मक मनोभाव है, बल्कि वह परिस्थिति, जो जैसी भी हो को स्वीकार करते हुये सकारात्मक कार्यवाही करेंगे, जैसी भी समय की मांग हो । आपको जैसे ही यह आत्म बोध हो जायेगा कि प्रत्येक समस्या के पीछे कोई न कोई सुअवसर छिपा रहता है, वैसे ही उस समस्या का स्वतः निदान निकल आयेगा । जैसे ही इस प्रकार का मनोभाव बनने लगेगा प्रत्येक अप्रिय परिस्थिति कोई न कोई सुअवसर प्रदान करने लगेगी, वैसा अवसर जो खुशनुमा हो, नया हो, जो व्यक्ति आपके लिये जो काँटा बो रहा है, वह आपको मार्गदर्शक लगने लगेगा, उनके प्रति मन में कोई नाराजगी पैदा नहीं होगी बल्कि हृदय में निश्छल प्यार प्रवाहित होगा। जब भी आपका सामना दुश्मन, विरोधी, मित्र से

होता है सभी के लिये एक ही श्रेणी, मित्र के रूप में लगेंगे । आप अपने को स्मरण दिलाईये कि यह क्षण वैसा ही है जैसा कि उसे होना चाहिये। आपने अब तक के जीवन काल में अपने ईर्द–गिर्द जैसा वातावरण बनाया है, वैसे ही लोगों से आपका सामना हो रहा है । और अगर आप अपना संतुलन बनाकर सभी को मित्र पहचान देने लगेंगे आप ऊपर उठने लगेंगे। लोगों की यह आम आदत है कि अपनी किसी बात को कटना हुआ बरर्दाश्त नहीं करते, अपनी बात की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए तरह तरह की दलीलें प्रस्तुत करेंगे कि सामने वाला उनकी दलीलों को स्वीकार करे वे यह नहीं समझते कि इस बेकार की बहस से वे स्वयं की कितनी ऊर्जा व्यय कर रहे हैं जिसे आप समझदारी से बचा सकते हैं। परिस्थितियों से समझौता करके चलना जीने की एक कला है जरा–जरा सी बात में उलझना, अपनी बात को ऊपर रखने का प्रयास करना, प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्तेजित होकर क्रोध और तनाव से भर जाना इस बात का द्योतक है कि प्रतिकूल परिस्थितियों को आप सुअवसर न समझकर इसे अपन अपने विरूद्ध मानते हैं। आईये एक उदाहरण देते हैं – मान लीजिये आप किसी सवारी में स्टेशन जा रहे हैं, राह में रेलवे की फाटक बन्द है या सड़क जाम है जिसके कारण रास्ता अवरूद्ध है, अब आप मन ही मन उबल रहे हैं, क्रोध और तनाव से भर रहे हैं, सोच रहे हैं आपकी ट्रेन छूट जाएगी, परन्तु क्या आपकी इस मन स्थिति से फाटक खुल जाएगी, जाम हट जायेगा ? नहीं, हर्गिज़ नहीं, तो फिर आपके मन ही मन उबलने से क्या लाभ क्या हानि हो रही है ? निश्चित रूप से आपको लाभ नहीं हानि हो रही है, क्रोध एवं तनाव के कारण शरीर की कीमती ऊर्जा बर्बाद हो रही है तथा रक्तचाप भी बढ़ रहा है, तब इस परिस्थिति में क्या किया जा सकता है? अपने

आपको यह स्वीकार कराईये कि सड़क खुलने पर ही आप प्रस्थान कर सकेंगे और जब आपको स्टेशन पहुँचना है, तभी आप पहुँचेंगे ट्रेन रहे या जाये और आराम से अपने वाहन में बैठे रहिये। यह हुआ परिस्थिति से समझौता करना। मन को स्वीकार कराना और जैसे ही आपका मन स्वीकार कर लेगा तनाव और दबाव समाप्त हो जायेगा। जब आप किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में शान्त, प्रसन्न, आनन्द से हैं तो बिना किसी शंका के यह निश्चित है कि जो आप चाहते हैं,जहाँ भी आप चाहते हैं वह आपके लिए उपलब्ध है। कारण आपकी आवश्यकता के पीछे आपकी प्रसन्नता और आनन्द की ऊर्जा कार्य करती है, यह एक शक्तिशाली सकारात्मक ऊर्जा है । अगर आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचना है तो मार्ग में आने वाली किसी बाधा से उलझिये नहीं, उसे अनदेखा करते हुये अपने गंतव्य की ओर बढ़ते जाईये । प्रातः काल सो कर उठने के उपरान्त दिन भर के लिये कुछ शुंभकर बातों पार विचार करिये कि आज के दिन हम सभी व्यक्तियों, स्थितियों, परिस्थितियोंएवं घटनाएं जो जैसे घटित हो रही है, उन्हें स्वीकार करेंगे और जो भी अनहोनी , कटु, अप्रिय, प्रतिकूल घटनायें होंगी उनकी जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर लेगें किसी अन्य व्यक्ति को उसके लिए दोषी नहीं ठहरायेंगे और आज के दिन हम किसी भी व्यक्ति से अनावश्यक विवाद में पड़कर अपने विचारों या निर्णय को किसी पर नहीं थोपेंगे।

आप अपने को जितना अधिक शान्त, प्रसन्न, निश्छल एवं करूणामय बनायेंगे रेकी उतनी अधिक प्रवाहित होगी और रेकी लेने वाला व्यक्ति उतना ही अधिक रेकी ग्रहण कर सकेगा । अगर कोई व्यक्ति कुछ दिनों तक रेकी से लाभ पाकर उसके बाद यह कहे कि अब आगे लाभ नहीं हो रहा है तो यह

निश्चित जानिये कि उनकी नकारात्मक विचार धारायें संगम की तरह एकत्रित होकर रेकी के प्रवाह को रोक रही है, अतएंव जब तक उसकी उन नकारात्मक भावनाओं को सकारात्मक मोड़ नहीं दिया जायेगा रेकी उतना अधिक प्रभावी नहीं रहेगी।

विशेषकर करूणा रेकी प्रारंभ करने के पूर्व अपनी मनोदशा को प्रसन्न करूणामय एवं निश्छल प्यार से ओत–प्रोत रखिये।

करूणा रेकी कैसे प्रारंभ करें

1. सर्वप्रथम रेकी करने की इच्छा होनी चाहिये और उसके साथ आप अपना उचित आसन ग्रहण कर लें, दोनों पैर अलग कर बैठ जाये या लेट जाये।
2. अब कृतज्ञता प्रकट करें – सर्वप्रथम अपना नाम लेकर स्वयं अपने आप को मन ही मन धन्यवाद दें रेकी को धन्यवाद दें, रेकी गुरू को धन्यवाद दें, अपने माता–पिता को धन्यवाद दें, और अपने ईष्ट देव को धन्यवाद दें, अगर आप किसी अन्य व्यक्ति को रेकी चेनल कर रहें हैं तो उन्हें भी मन ही मन धन्यवाद दें।
3. अब आप काल्पनिक दृष्टि से अपने आपको देखिये कि आप सफेद चमकदार प्रकाश से पूरी तरह ढके हुये हैं ।
4. आपकी आँखें बन्द है, अब आप जिस व्यक्ति/स्थान को रेकी भेजना चाहते हैं उसे अपनी काल्पनिक आँखों से अपने आज्ञा चक्र में देखिये अगर आप अपनी हथेलियाँ रखकर किसी को रेकी दे रहे हैं तो उन्हें भी आल्पनिक आँखों से आज्ञा चक्र में देखिये।
5. जिस व्यक्ति को आपने आज्ञा चक्र में देख रहें हैं यह कल्पना करिये कि वे पूरी तरह से चमकदार सफेद प्रकाश से ढके हुये हैं।
6. अब आप उस व्यक्ति के रोग या कार्य का ध्यान करिये जिसके लिए आप उन्हें रेकी दे रहे हैं। अगर एक से अधिक रोग व्याधि है तो एक एक करके सभी का ध्यान करिये । अब यह ध्यान करिये कि उस

व्यक्ति को जो भी रोग व्याधियाँ हैं वे सभी ठीक हो गई है और यदि कार्य है तो वह पूर्ण हो गया है।

7. अब उस व्यक्ति/कार्य से ध्यान हटाकर अपने आज्ञा चक्र में संबंधित सिंबल बनाईये। अगर आप एक से अधिक व्यक्ति को रेकी चेनल करना चाहते हैं तो अब दूसरे व्यक्ति को अपने आज्ञा चक्र में लाईये और क्रम संख्या 4 से उनके लिए रेकी प्रारंभ करिये ।

करूणा रेकी की शक्ति प्राप्त करने के लिए आपको यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम इक्कीस दिनों तक अपने शरीर के 24 पोजिशन पर सभी सिंबल से रेकी लीजिये। इससे लाभ यह होगा कि सिंबल के स्पन्दन से आप परिचित हो जायेंगे आपको अच्छा अनुभव हो जायेगा और जो सिंबल आपके लिए लाभकारी होंगे आपका शरीर ग्रहण कर लेगा । यह निश्चित जानिये कि करूणा रेकी के किसी सिंबल से कोई हानि नहीं है। एक साथ अनेक सिंबल का उपयोग नहीं होना चाहिये जैसे ही कोई एक सिंबल बनाया जाता है उसकी शक्ति अपना कार्य करने लगती है, परन्तु उसके बाद कई एक सिंबल लगातार बनाते रहने से सभी सिंबल अपनी शक्ति का पूरा पूरा प्रभाव नहीं दिखला पाते हैं । अतः होना यह चाहिये कि एक साथ बहुत अधिक सिंबल नहीं बनाये एक बार में दो या अधिक से अधिक तीन सिंबल का उपयोग करें। उदाहरण स्वरूप आप किसी व्यक्ति के रोग व्याधि का उपचार कर रहे थे और अगर वह व्यक्ति कही ंदूर है तो आप पहले जोनर बनाकर उससे सम्पर्क स्थापित किजिये, उसके बाद हालू बनाईये। अगर बीमार व्यक्ति अपनी बीमारी के कारण अधिक चिड़चिड़े या क्रोधित रहते हैं तो उनके लिए सिंबल हर्थ बनाईये परन्तु बीमार व्यक्ति

अपनी बीमारी के कारण अशांत है, तरह तरह के बुरे विचार आते रहते हैं तो उनके लिए शान्ति सिंबल बनाईये । इस प्रकार अधिक से अधिक तीन सिंबल बनाये गये । अगर बीमार व्यक्ति बहुत ही असंतुलित है और ऐसा लगे कि उनके चक्रों का संतुलन आवष्यक है तो दूसरी बार जब उन्हें रेकी चेनल करें तो शान्ति सिंबल के स्थान पर रामा का उपयोग कर सकते हैं। अगर ऐसा लगे कि अमुक वृद्ध रोगी अपनी बीमारी की अवस्था में भी सांसारिक समस्याओं में विशेष ध्यान दे रहा है तो अगली बार रेकी चेनल करते समय रामा के स्थान पर नोसा सिंबल का उपयोग करें।

अगर किसी बीमार व्यक्ति के शरीर पर हथेलियाँ रखकर उनका उपचार कर रहे हैं तो जोनर सिंबल बनाना आवश्यक हो सकता है, कारण जोनर का उपयोग जहाँ एक ओर सम्पर्क सेतु के लिए किया जाता है वहीं दूसरी ओर जोनर का उपयोग पिछले जन्म के किसी दोषपूर्ण कर्म से मुक्ति के लिए भी किया जाता है मान लीजिये आप किसी शिशु का उपचार कर रहे हैं जिसकी बीमारी किसी नकारात्मक विचारों के कारण नहीं हो सकती ऐसी सम्भावना शिशु में नहीं होती है तो इस बात को मानकर चलना चाहिये कि पिछले जन्म के किसी कर्म के कारण शिशु को यह कष्ट है। ऐसी स्थिति में स्पर्श–चिकित्सा के साथ जोनर सिंबल का उपयोग लाभकारी होगा उसके बाद हालू सिंबल बनाईये। अगर शिशु कष्ट के कारण छटपटा रहा हो और अषांत है तो शान्ति सिंबल का उपयोग कर सकते हैं।

1. जोनर

यह रेकी का पहला सिंबल है जेड आकृति खींचें। पुनः उसी रेखा पर वापस आयें एवं इनफिनिटी सिंबल तीन बार बनाएं।

विगत अनुभवों से इस सिंबल का अच्छा अनुभव रहा है, जिन वस्तुओं को हम स्पष्टतः वर्णित नहीं कर पाते उन परस्पर विभिन्न आयामों को यह सिंबल जोड़ता है हमारी मानसिक याद्दाश्त की स्मृतियों को अथवा विचारों को हमारी कोशिकायें एकत्रित करती है तथा अन्य अनुभवों को हमारे सम्मुख लाती है। जोनर का प्रयोग दूरवर्ती उपयोग करने हेतु किया जाता है । यह विगत जन्मों के अनुभवों को कोशिका मय स्तर पर लाते हैं। जोनर ऐसे बालकों हेतु भी उपयोगी है जो गालियों का प्रयोग करते हैं।

हमारी धारणा परिणाम को परिवर्तित कर सकती है। हम अपने दृष्टिकोण को बदल अपने जीवन में परिवर्तन लाते हैं, तथापि यदि यह हमारे जीवन का एक अंग है जो कथन के द्वारा परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है । प्रार्थना हृदय से निकलती है तथा देवी/देवता के साथ हमारी आत्मा का संबंध जुड़ता है अतः जब हम प्रभु से कहते हैं– आप सबके प्रभु हैं, आप सर्वत्र विद्यमान हैं, मैनें अथवा मेरे पूर्वजों ने अपने जीवन में जो भी पाप किये हैं उसे आप दूरे करें तथा मुझे शुद्धता प्रदान करें। मैं आजीवन आपकी शरण में रहूँ यही मेरी प्रार्थना है। इटली भाषा का यह शब्द किसी भी उपयुक्त वाक्यांश में प्रयुक्त किया जा सकता है।

हम जो कार्य करें ईश्वरीय आदेश से करें अपने अवगुणों को छोड़ दें तथा अपने जीवन में सद्‌गुणों को अपनायें। बीवरलिन बर्नेट कैलिफोर्निया ने इस वाक्यांश में यह जोड़ा – संसार में केवल ईश्वर ही सार्वभौमिक अथवा सर्वत्र व्याप्त है।

जोनर सिंबल के द्वारा पिछले जन्मों के ऐसे नकारात्मक विकारों,कमियों से मुक्ति पाई जा सकती है जो पिछले जन्म से चली आ रही है।

प्रकृति का यह शाश्वत नियम है कि जो बोऐंगे वही काटेंगे, जो हम दूसरों को देंगे वही प्राप्त होगा, जब हम किसी को कष्ट देते हैं, दुखी करते हैं प्रताड़ित करते हैं तो वह सभी लौटकर हमारे पास आता है और व्यक्ति स्वयं उन परेशानियों, कष्टों से घिर जाता है । वर्तमान काल के जो कर्मदोष हैं उनसे भी जोनर छुटकारा दिलाता है। अनेक लोगों का बचपन उनसे छिन जाता है, बचपन में, छोटी उम्र में नौकरी या काम के दौरान उन्हें अनेक प्रकार की प्रताड़ना प्राप्त हो सकती है, जिससे एक प्रकार की हीन भावना उनके मन में व्याप्त हो जाती है।

पिछले कर्मों से मुक्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना एक सशक्त विधि है। प्रार्थना जब हृदय से निकलती है तो आत्मा एवं परमात्मा का मिलन होता है और जब हम प्रार्थना करते हैं हमारे हृदय में जिस ईश्वर का निवास है वह सर्वशक्तिमान परमात्मा से यह प्रार्थना करता है कि मेरे में जो निर्धनता, दोष और मेरे पूर्वजों से जो भी पाप हुआ है जिसे मैंने इस जन्म या आगे वाले जन्मों में प्राप्त करता हूँ उससे मुझे मुक्ति दो । प्रार्थना के किसी वाक्य में परिवर्तन करना चाहें तो आप कर सकते हैं

परन्तु ध्येय यही रहे कि जीवन के प्रवाह में जो मेरे हित में हो वही मैं प्राप्त करूं और उन कर्मों से मुक्त हो जाऊँ जिसके कारण कष्ट हो रहा है, जिनकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है और मैं स्वयं बुरे कर्मों से बचा रहूँ।

उक्त प्रार्थना के साथ जोनर का उपयोग अत्यन्त सशक्त हो जाता है। रेकी चैनल करने से पूर्व उपरोक्त प्रार्थना मन ही मन की जाय और विश्वास के साथ यह ध्यान करें कि मैं स्वयं या अमुक व्यक्ति अपने कर्मों से मुक्त हो गया है और तब जोनर सिंबल के साथ 10 –15 मिनट तक 11 से 21 दिनों तक रेकी दी जाये।

2. हालू

यह सिंबल जोनर का विस्तार है, जेड पूरा हो गया है और उस पर एक पिरामिड लगा दिया गया है। यह जोनर से अधिक शक्तिशाली सिंबल है जो अत्यन्त व्यापक एवं गहरे स्तर पर कार्य करता है। रोग व्याधि की अवस्था में जीवन शक्ति का प्रवाह शरीर में असंतुलित हो जाता है जिसके कारण रोगग्रस्त अंग में जमे हुये रोग के विषाणु, कीटाणु अधिकाधिक क्रियाशील होने लगते हैं और रोग व्याधि बढ़ने लगती है । परम्परागत चिकित्सा प्रणाली उक्त रोग व्याधि के लक्षण मात्र को शान्त रखने का प्रयास करते हैं। रोग व्याधि का ध्यान कर जब हालू सिंबल चैनल करना प्रारंभ करते हैं तो उस अंग में जीवन शक्ति का प्रवाह जो असंतुलित या बाधित हो गया वह संतुलित होता है साथ ही रोग व्याधि के विषाणु, कीटाणु टूट कर बिखरने लगते है। हालू सिंबल का महत्व बढ़ जाता है उसकी शक्ति रोग प्रभावित अंग में गहराई तक प्रवेश करने में सक्षम है।

यह देखने में आता है कि अनेक लोगों के अवचेतन मन में नकारात्मकता तथा भय की भावना घर बनाए रखती है । वे सदैव किसी भी बात का अंधकारमय या नकारात्मक पहलू ही देखते हैं और इस प्रकार सकारात्मक भाव या सच्चाई से दूर होते जाते हैं। उदाहरण के लिये मान लीजिये दरवाजे की घंटी बजी और आवाज आई पोस्टमैन, तार । अब पहला विचार ऐसे लोगों के मन में आयेगा—ओह मेरे अमुक

रिश्तेदार बीमार चल रहे थे कहीं सिधार तो नहीं गऐ । उनका चेतन मन यह कभी नहीं सोचेगा कि तार के द्वारा शुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है । व्यक्ति के अवचेतन मन में भय या नकारात्मक विचारों का जो ढाँचा बन गया है उसे यह हालू सिंबल तोड़ता है और उन विचारों को सकारात्मक बनाता है । यह पाया गया कि धीरे–धीरे व्यक्ति के विचार सकारात्मक होने लगते हैं किसी किसी व्यक्ति में इंकार की प्रवृति बनी रहती है । कोई बात या कार्य उन्हें कहा जाय या उनसे परामर्श लिया जाए तो बिना कोई मनन किये वे कहेंगे यह काम कभी नहीं हो सकता है या यह कार्य होने लायक नहीं है, किसी भी बात का नकारात्मक पक्ष उन्हें पहले दिखेगा। इसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ने लगता है और असफलता के क्षेत्र में प्रवेश करने लगते हैं और अगर लगातार असफलता दिखती है तो नैराश्य, भय एवं क्रोध व्याप्त होने लगते हैं और वह दिन दूर नहीं कि ऐसे व्यक्ति अवसाद के चंगुल में फँस जाते हैं। तब जीवन बोझिल होने लगता है। अवसाद अपने आप में एक गम्भीर व्याधि है और परम्परागत चिकित्सा प्रणाली में इसकी चिकित्सा अत्यन्त कठिन है । डिप्रेशन रोग के पीछे जो तत्व कार्य करते हैं उनमें प्रमुख है नैराश्य, भय एवं क्रोध के भाव जैसा कि देखने में आया है, नकारात्मकता की प्रवृति के व्यक्तियों में डिप्रेशन सुगमता से प्रवेश करता है। हालू सिंबल व्यक्ति के उस नकारात्मकता की प्रवृति हटाता है और व्यक्ति सकारात्मक होने लगता हैं।

इस प्रकार की नकारात्मक प्रवृति के साथ किन्हीं–किन्ही व्यक्तियों में अनावश्यक भ्रम की प्रवृति भी देखते में आती है । यह भ्रम

होने लगता है कि अंधेरे में कोई खड़ा है या कोई चल रहा है। उसके पदचाप का भ्रम होने लगता है किसी व्यक्ति के आचरण पर भ्रम होने लगता है, संदेह होने लगता है कि मेरा सामान अमुक व्यक्ति ने ही चुरा लिया है या अमुक व्यक्ति ने मेरे ऊपर कोई टोना–टोटका कर दिया है जिसके कारण ही यह कष्ट हो रहा है । भ्रम व्यक्ति के अवचेतन मन में प्रवेश कर जाता है और लगातार बने रहने के कारण चैतन्य मन में प्रकट होता है। कहते हैं सभी बातों का निदान है परन्तु भ्रम का कोई निदान नहीं है । ऐसी बात नहीं है हालू सिंबल से भ्रामक प्रवृति का शक्तिशाली उपचार संभव हैं यह सिंबल व्यक्ति के आत्मज्ञान को बढ़ाता है और उच्च ज्ञान प्रकाश के क्षेत्र में प्रवेश कराता है।

हालू सिंबल का उपयोग शारीरिक या ‘‘सेक्स‘‘ उत्पीड़न के कारण उत्पन्न हुये मानसिक सन्ताप से छुटकारे के लिये किया जाता हैं सेक्स उत्पीड़न या रेप के कारण एक गम्भीर मानसिक सन्ताप उत्पन्न होता है जिसके कारण जीवन शैली बुरी तरह प्रभावित हो जाती है । हालू सिंबल से माथे अंग सं 4,5, चक्र अंग सं 8 एवं स्वाधिष्ठन चक्र अ सं 13 करुणा रेकी 5–5 मिनट 11 दिनों तक दे दी जावे । साथ ही उनके मनः विचारों को भी घनिष्ठ वार्तालाप से बाहर निकाला जाना चाहिये । इस उपचार से सेक्स प्रतारणा के मासिक सन्ताप से मुक्ति मिलती है।

यह सिंबल प्यार, सत्य, सुन्दरता में समन्वय स्थापित करता है। हृदय के घावों को भरने हेतु हर्थ का प्रयोग किया जाता है । व्यक्ति के हृदय में करूणा का भाव जाग्रत करने में उनकी मदद करता है । ये

सम्बन्धों को सुधारने में भी मदद करता है । ये सभी प्रकार से जीवन में प्यार एवं वस्तुओं के प्रति प्रेम को पुनः संचारित करता है।

असफलताओं एवं सांसारिक कठिनाईयों के कारण जीवन से निराध व्यक्तियों में स्वंय अपने से प्यार करने को प्रेरित करते हुये स्वयं के दोष बोध व ईर्ष्या से मुक्त कराता है, कटुता एवं क्रोधी प्रकृति में बदलाव लाते हुये मन में सभी के प्रति प्यार, ममता, करूणा का प्रकाश फैलाता है। रिष्तेदारी में हुये मनमुटाव एवं टुटते रिश्ते के घावों को भरकर आपसी संबंधों में सुधार करता हैं दिन के पुराने घावों को भरता है।

मनुष्यों में रोग व्याधियाँ क्यों होती है ? इस संबंध में अनेकानेक शोधकार्य हुये हैं। मनोदेहिक रोग विषेषज्ञों (साईकोसोमेटिक्स) ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात बताई कि अगर सभी लोगों के लिये एक फैक्टर जिम्मेदार है तो वह प्यार की कमी। जितने भी नकारात्मक मनोविचार है सभी प्यार की कमी के कारण हैं । जीवन के किसी न किसी पथ में प्यार की कमी रहती है । अगर व्यक्ति में निश्छल प्यार प्रवाहित होता रहे किसी को कष्ट में देखकर द्रवित हो उठे, ह्रदय करूणा एवं ममता से भर जाए तो वह कभी बीमार पड़ ही नहीं सकता । पशु–पक्षियों को देखिए, भोजन के लिये अन्य से वह संघर्ष सकते हैं, परन्तु उसके बाद स्थिति सामान्य हो जाती है, वे आपसी कटुता,वैमनस्य नकारात्मक भाव ढोते नहीं रहते हैं और इसी कारण उनमें मनोदेहिक रोग नहीं होते हैं, जबकि एक आंकलन के अनुसार मनुष्यों में करीब 90 प्रतिशत रोग व्याधियाँ मनोदैहिक (साइकोसोमेटिक) होती है और मात्र 10प्रतिशत रोग व्याधियाँ बाह्रय कारणों से होती है।

3. हर्थ

यह सिंबल प्यार, सच्चाई, खूबसूरती, समरूपता की भावनाओं को सन्तुलित कर व्यक्ति में उच्च जीवन शक्ति प्रवाहित करता है।

आज के भौतिकता वादी जीवन में प्यार की कमी चारों ओर परिलक्षित होती है । परिवार में बच्चे हैं आपस में झगड़ते हैं, भाईयों और बहुओं में द्वेश की भावना है, माता–पिता है उनकी अलग नाराजगी है, सभी का कारण प्यार की कमी । हर्थ सिंबल व्यक्ति, परिवार में प्यार का स्त्रोत बनाता है । इसके लिये अपने आज्ञा चक्र में उन बच्चों को एक–एक करके लाईये, परिवार में अगर मन–मुटाव है तो प्रत्येक को बारी–बारी से आज्ञा चक्र में देखिये , रिश्तेदारी में दरार है तो उन्हें एक एक करके आज्ञा चक्र में लाईये , कल्पना करिये कि सफेद चमकदार प्रकाश में ढके हैं और आपस में किसी प्यार और अपनेपन से मिल बैठ कर बातें कर रहे हैं, कितने प्रसन्न है और तब जोनर बनाकर आज्ञा चक्र में चक्र हर्थ सिंबल लगातार बनाईये और बीच–बीच में शान्ति सिंबल बनाते जाईये, देखिए कितना प्रभावकारी होता है । सभी में आपसी प्यार का संचार होगा और दरार समाप्त होगी।

सुन्दरता मात्र शरीर की नहीं होती है, मन भी सुन्दर होना चाहिये परन्तु देखने में आता है कि तन की कुरूपता के कारण एक हीन भावना मन में पैदा होने लगती है और इस हीन भावना का कुप्रभाव सभी क्षेत्र में पड़ने लगता है, नकारात्मक विचार पनपने लगते हैं, क्रोध बढ़ने लगता है। इन्हें दूर करने के लिये हर्थ सिंबल कारगर होता है।

घर में कोई बड़े बुजुर्ग है, अवकाश का जीवन व्यतीत कर रहे हैं । अगर कभी परिवार के किसी सदस्य ने कोई सुन्दर वस्तु क्रय किया तो उन्हें अच्छा नहीं लगता है बेकार पैसा बर्बाद कर दिया उनकी यह सोच होगी, हालांकि धन की कमी नहीं है। लड़के मेहनत करके धनोपार्जन करते हैं और अपना शौक पूरा करते हैं । परन्तु डरते है कि पिताजी इसे देखेगें तो नाराज होंगे, कारण उन्हें सुन्दर वस्तु से कोई लगाव नहीं है ऐसे मनोभावों को दूर करने के लिये हर्थ सिंबल बहुत उपयोगी होता है।

हर्थ सिंबल का उपयोग गलत लत से छुटकारा दिलाने के लिये भी किया जाता है किसी प्रकार की गलत लत परिवार के किसी सदस्य को लग गई हो तो हर्थ उपयोगी होती है।

4. रामा

यह प्रतीक छः दिशा–निर्देशों एवं पृथ्वी के साथ संबंधों के आधार रूप में प्रयुक्त होता है। यह निम्नतर चक्रों को उजागर कर पृथ्वी के साथ संबंध जोड़ता है। यह ऊपर के चक्र और नीचे के चक्रें को समरसता प्रदान करता है। नीचे वाले चक्रों को शक्ति प्रदान करता है। हमारी ऊर्जा जब नकारात्मक मोड़ ले लेती है तो उसे दूर कर स्वच्छ, सकारात्मक बनाने में मदद करता है । दृढ़ निश्चय एवं पक्के इरादे को और मजबूत करता है।

यह सिंबल निवास स्थान या कार्य स्थान जैसे– दुकान, फैक्ट्री, कार्यालय आदि में किसी की बुरी नजर, टोना टोटका या प्रेत बाधा से मुक्ति दिलाता है । क्रिस्टल या माला के नकारात्मक प्रभाव को दूर करता है। भौतिक लक्ष्य को बलशाली बनाते हुये उस लक्ष्य को साकार करने में सहायता प्रदान करता है । इस सिंबल में सात धारियाँ है, बीच की गोल धारी ह्रदय चक्र की ओर इंगित करती है जो ऊपर एवं नीचे के तीन–तीन चक्रों में समन्वय स्थापित करता है।

यह सिंबल छः दिशाओं से शक्ति प्राप्त कर उसे व्यक्ति के पृथ्वी तत्व से जोड़ता है। अलौकिक शक्तियाँ सभी दिशाओं में उपलब्ध है जिन्हें ये सिंबल एक प्रकार के चुम्बकीय आकर्षण से राह दिखाते हुये आप तक पहुँचाता है। कुल सात प्रमुख चक्रों में से निचले तीन चक्र मूलाधार, स्वाधिष्ठान एवं मणिपुर चक्र सांसारिक चक्र कहे जाते हैं। अगर ये तीन निचले चक्र असन्तुलित हो जाते हैं तो तरह –तरह की

आर्थिक एवं सामाजिक कठिनाईयाँ व्याप्त हो जाती है । इनमें प्रमुख मूलाधार चक्र है जो व्यक्ति के स्थायित्व, प्रचुरता एंव सम्पन्नता का सिंबल है और इस चक्र के असन्तुलित होने से परिवार मे तरह–तरह की हानि, कलह, विवाद एवं परेशानियाँ प्रारंभ हो जाती है। रामा सिंबल इस चक्र को सन्तुलित करते हुये रक्षा करता है । सात प्रमुख चक्रों में ऊपर के तीन चक्रों को आध्यात्मिक चक्र कहा जाता है – सहस्त्रार चक्र, आज्ञा चक्र एवं विषुद्ध चक्र। हृदय चक्र ऊपर एवं नीचे अर्थात आध्यात्मिकता एवं सांसारिकता के चक्रों में समन्वय स्थापित करता है। परन्तु जब व्यक्ति में सांसारिक चक्र असन्तुलित हो जाते हैं तो उस पर गहरा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और उसकी कामनायें, इच्छायें, वासनायें, लोलुपता,चपलता, कटुता, जाल–फरेब एवं मिथ्या आचरण बढ़ने लगती है । रामा सिंबल का प्रयोग करने पर आध्यात्मिकता एवं सांसारिकता में संतुलन स्थापित करता है । रामा सिंबल को अगर हम गौर से देखेंगे तो उसमें सात चक्र हैं जिनमें पाँच चक्र तो गोलाई में पूर्ण हैं और दो चक्र चन्द्राकार हैं सबसे ऊपर चमकदार है, सबसे ऊपर चन्द्रकार सहस्त्रार चक्र का द्योतक है , उसके नीचे गोलाकार आज्ञा चक्र, उसके नीचे विशुद्ध चक्र की गोलाई है जिस स्थान पर दोनों सही के चिन्ह एक दूसरे को काटते हैं उसे जिस गोलाई ने घेरा है वह हृदय चक्र का द्योतक है, उसके मूलाधार चक्र मणिपुर एवं स्वाधिष्ठान चक्र का गोलाकार चक्र है और सबसे नीचे चन्द्रकार मूलाधार चक्र का द्योतक है।

जब इस सिंबल के साथ किसी व्यक्ति को रेकी दी जाती है तो उसके सभी चक्र सन्तुलित हो जाते हैं । यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि अगर सातों प्रमुख चक्रों में से एक भी चक्र असन्तुलित हो जाता है तो बाकी के चक्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । शरीर के सभी चक्र ऊर्जा केन्द्र हैं जिन्हें हम बिजलीघर भी कह सकते हैं और प्रत्येक चक्र से शरीर का कोई न कोई अंग जुड़ा हुआ है अतः जब कोई चक्र दोषपूर्ण कार्य करने लगता है तो उससे संबंधित अंग प्रभावित होकर रोग ग्रस्त हो जाता है जैसे उस अंग को शक्ति प्राप्त नहीं हो रही है।

उदाहरण स्वरूप अगर स्वाधिष्ठान चक्र असन्तुलित, कमजोर या दोषपूर्ण हो जाय तो मूत्राशय, सेक्स और पेडू क्षेत्र संबंधित रोग के अलावा स्त्रियों में बाँझपन शिशु जन्म में कठिनाई , अकाल प्रसव जैसी कठिनाईयाँ होने लगती है । अगर निचले पृथ्वी तत्वों के चक्रों द्वारा ऊर्जा प्रवाह सन्तुलित रूप में नहीं हो रहा है तो यह सिंबल उसे भी सन्तुलित करता है। रामा सिंबल का उपयोग क्रिस्टल या धारण की जाने वाली माला को नकारात्मक ऊर्जा को साफ करने के लिए भी किया जाता है। क्रिस्टल या माला की प्रोग्रांमिग करने के पूर्व उन्हें बहुत हल्के नमकयुक्त पानी में 48 घण्टे भिगोकर रखिए, उसके बाद उन्हें स्वच्छ जल से खूब अच्छी तरह धोकर नमक का पानी साफ कर लें । अब क्रिस्टल या माला प्रोग्रामिंग के लिये तैयार हो गये हैं । सर्वप्रथम उन्हें हाथों में लेकर रामा सिंबल दीजिये करीब 10 मिनिट तक, तदुपरान्त जिन सिंबल से प्रोग्रामिंग करना है उन्हें चैनल करें।

रामा सिंबल आपके लक्ष्य की कामना को दृढ़ करते हुये उसकी प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त करता है । मान लीजिए आपको किसी साक्षात्कार, परीक्षा नेगोषिएषन के लिए जाना है, अपने जाने के पहले उस लक्ष्य को रामा सिंबल से रेकी दी जाती है तो जहाँ एक ओर आपके मन में उस लक्ष्य की कामना दृढ़ होगी वहीं दूसरी उस लक्ष्य की प्राप्ति में भी आसानी होगी। यह सिंबल आपकी दृढ़ता एवं निश्चय को शक्ति प्रदान करता है।

5. नोसा

यह सिंबल आपका उच्चतर स्तर ज्यादा मजबूत बनाता है। भौतिक स्तर पर ज्यादा सर्तक बनाता है । जागरूकता का विकास करता है ।

मात्र भौतिकता की लालसा मन में अशान्ति को निमंत्रण देती है । अगर भौतिकता के साथ अध्यात्म को भी जोड़ दिया जाय तो शान्त मन एवं सूझ–बूझ के साथ भौतिक लक्ष्य को सफलता के साथ प्राप्त किया जा सकता है। यह सिंबल गहराई के साथ आत्मा ज्ञान से जोड़ता है और आध्यात्मिक स्तर एवं भौतिक स्तर में सन्तुलन स्थापित करना है । अवचेतन मन को सन्तुलित करते हुये व्यक्ति के चैतन्य मन को शक्तिशाली बनाता है। काल्पनिक उड़ान से छुटकारा दिलाता है जिससे स्थिर मन एवं उच्च ज्ञान के साथ किसी भी कार्य को सुचारू रूप से किया जा सके ।

यह सिंबल आध्यात्मिक शान्ति को बढ़ाता है और आत्मा को परिष्कृत करता है । कभी कोई व्यक्ति अत्यन्त भौतिकवादी हो जाता है कामना, लालसा इच्छायें मन को इस प्रकार घेर लेती है कि नैतिकता का मार्ग छूट जाता है । धन की लोलुपता एवं काम–वासनाएँ बहुत तीव्र हो जाती है और उनकी प्राप्ति के लिए अन्धकार के गड्डे में गिरने लगता है । बच्चों या युवा पीढ़ी में यह देखने मे आता है । कभी कभी वे खेलकूद, टी.वी. घूमने–फिरने में ही आनन्दित रहते हैं । इन सभी को उनके स्थूल शरीर में यह सिंबल नोसा उच्च जाग्रति, सजगता एवं सही मार्ग की अनुभूति प्रदान करता है।

जो लोग ध्यान करना चाहते हैं और जैसे ही ध्यान लगाना चाहते हैं तरह–तरह की बातें मन में आने लगती है और जिधर ध्यान लगाना चाहते हैं वह संभव नहीं हो पाता । नोसा सिंबल से ध्यान एवं ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है और आध्यात्म की ओर झुकाव बढ़ता है।

6. क्रिया

इस सिंबल का प्रयोग भौतिक दृष्टि से व्यक्ति को सुस्पष्ट बनाने में एवं प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ में मन के घावों को भरने हेतु होता है।

किसी प्रकार के भौतिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस सिंबल का उपयोग किया जाता है। व्यापार में लाभ, परीक्षा में सफलता, वैवाहिक संबंधों की प्रगाढ़ता, अचल सम्पत्ति की खरीद–बिक्री, चल सम्पत्ति, सुख वैभव की प्राप्ति, न्यायालय में वाद का सुखद निष्पादन आदि भौतिकता से जुड़ी जितनी भी समस्यायें हैं सभी के लिए इस सिंबल का प्रयोग किया जाता है।

भौतिक आंकाक्षाओं की पूर्ति के लिए क्रिया सिंबल का उपयोग किया जाता है । इस सिंबल में अलग–अलग दो सिंबल हैं, दाहिनी ओर जो सिंबल है वह उसुई रेकी का तीसरा सिंबल है। इसका घुमाव उल्टी घड़ी है और यह सिंबल शक्ति का सिंबल है । उसुई रेकी के सिंबल एक एवं दो को यह तीसरा सिंबल शक्ति प्रदान करता है, शक्ति को विस्तारित करता है, उसे ऊँचा करता है करूणा रेकी में उसके साथ उसी के तरह का एक ओर सिंबल है, परन्तु इसकी दिशा विपरीत है साथ ही इसमें घुमाव घड़ी अनुसार है। ये दोनों मिलकर भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए करूणा रेकी में उपयोग में लाये जाते हैं। इस सिंबल का उपयोग भी अत्यन्त आसान है । किसी भौतिक आकांक्षा की पूर्ति के लिए उस आकांक्षा को अपनी काल्पनिक दृष्टि से अपने आज्ञा चक्र में देखते हैं जो पूरी तरह सफेद प्रकाश से घिरा हुआ है और वह आकांक्षा पूर्ण हो गयी है । उसके बाद सर्वप्रथम जो सिंबल बनाईये और उसके बाद लगातार कुछ देर तक क्रिया सिंबल बनाते रहिये । क्रिया सिंबल का उपयोग किसी भी भौतिक आकांक्षा की पूर्ति के लिए करते हैं। भूमि, भवन का क्रय–विक्रय का सुख संसाधन की वस्तुएं, परीक्षा, साक्षात्कार में सफलता, वैवाहिक संबंध आदि किसी इच्छा की पूर्ति को यह सिंबल सुगम करता है जो भी इच्छा है वह पूरी तरह स्पष्ट

होनी चाहिये। यह नहीं कि कोई भी मोटर साईकिल कोई भी नौकरी मिल जाय, उस इच्छा की पूर्ति के लिए कर्म करना भी उतना ही आवश्यक है और जब कि आप सत्त प्रयास कर रहे हैं यह सिंबल आपके प्रयास को सार्थक बनाने में योगदान देता है । भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये क्रिया एक शक्तिशाली सिंबल है, करूणा रेकी में यही एक सिंबल है जिसे भौतिक आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है। कठिन से कठिन कार्य भी इस सिंबल से संभव हुआ है।

भौतिक कार्य की सफलता में क्रिया सिंबल अत्यन्त आवश्यक है दूर से कार्य के लिए इससे पहले जोनर लगाकर इस सिंबल का प्रयोग करते हैं। क्रिया के साथ और तीन सिंबल का प्रयोग करते है। यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है । आगे चलकर हम देखेंगे कि क्रिया के साथ और किन प्रतीकों का प्रयोग करते हैं

7. ई–आह–वाह (ईवा)

यह सिंबल आपकी भौतिक वास्तविकता को पुनः निर्मित करता है । यह किसी अन्य की परियोजना का भाग नहीं है जागरूकता व वास्तविकता को उजागर करता है । आप अपनी योजना को कार्यान्वित करें तथा पृथ्वी पर मानव के कष्टों को दूर करें इस हेतु भी इसका प्रयोग होता है ।

हम बहुत से कार्यों की रूपरेखा तैयार करने में दूसरों के विचारों से प्रभावित होते हैं । कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि लोग अपना निर्णय हमारे ऊपर लाद रहे हैं और हम उसे उचित मानकर अनमने मन से क्रियान्वित करना चाहते हैं । यह सिंबल हमारी वास्तविकता को उजागर करता है। हम अपनी वास्तविकता को पहचानते हुये जो भी योजना किसी भी क्षेत्र में बनायी है उसे कार्यान्वित करने में सहायता देता है। भूमि दोष को भी दूर करता है । ई–आह– वाह सिंबल के उदाहरण में आ एवं वा के बाद ह की अत्यन्त हल्की ध्वनि आनी चाहिये । यह सिंबल हमारी वास्तविकता आवश्यकता को उजागर करता है।

भौतिक स्तर पर पेड़ –पौधे, पशु–पक्षी एवं मानव शरीर एक ही प्रकार के पूर्ण उपयोगी तत्वों जैसे कार्बन डाईऑक्साईड, ऑक्सीजन, नाईट्रोजन, हाईड्रोजन आदि तत्वों से बने हैं । बाजारों में ये सभी तत्व उपलब्ध है । परन्तु उन्हें क्रय करके हम पेड़ पौधे, पशु पक्षी, या मानव शरीर का निर्माण नहीं कर सकते हैं । शरीर तो पेड़–पौधे से इन तत्वों को स्वतः प्राप्त करता है । ऑक्सीजन आदि तथ्वों के समरूपता का प्रश्न नहीं है वास्तविक प्रकृति ने मानव शरीर को विशिष्ट स्तर पर रखते हुये उसे ज्ञान प्रदान किया है यही ज्ञान तन्तु मानव शरीर के ऊर्जा क्षेत्र की पहचान हैं। इन ज्ञान तन्तुओं के द्वारा हम अपने शरीर में अन्य बातों के अलावा जो अनुभव करते हैं वह है हमारे सोच विचार, यादें, भावनायें, उद्देष्य, इच्छा, आवश्यकता, आत्मबोध, कार्य शक्ति, विश्वास, विचार, इत्यादि । हमारे शरीर के ज्ञान तन्तु हमारे शरीर के

ऊर्जा क्षेत्र की पहचान ही नहीं बल्कि इन ज्ञान तन्तुओं के द्वारा हम अपने शरीर में ऊर्जा का परिवर्तन कर सकते हैं और अपनी इच्छा, मकसद के अनुसार अपने आवश्यक तथ्यों का सृजन भी कर सकते हैं और उन्हें वास्तविकता में परिवर्तित भी कर सकते हैं। जिस ओर हम विशेष ध्यान देते हैं उस ओर हमारी ऊर्जा की अधिक आपूर्ति होती है जिसके कारण हमारा मसकद पूर्ण होता है और जिस ओर से हम अपना ध्यान हटा या खींच लेते हैं वह उद्देश्य ऊर्जा के अभाव में स्वयं ही समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर इच्छा और मकसद के बलवती होने पर हम अधिकाधिक ऊर्जा उस ओर प्रवाहित विशेष ध्यान देते रहने से वह लक्ष्य की शरीर में अन्य बातों के अलावा अनुभव होता है। वास्तविकता को उजागर करने की एक विशेष शक्ति सृजित होती है अन्य जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों की अपेक्षा मानव शरीर की यह विशेषता है कि वह अपनी इच्छा शक्ति, मकसद पूर्ति की कामना से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है । भूतकाल, वर्तमान काल एवं भविष्य काल हमारी चेतनायें है। भूतकाल हमारे खट्टे–मिठे अनुभव एवं भावनाओं को यादगारों का भण्डार है। वर्तमान में हमारी चैतन्यता है और भविष्य काल में हमारी इच्छाओं एवं आवष्यकताओं की पूर्ति की प्रतिक्षा है। भूतकाल एवं भविष्य काल हमारी सोच एवं कल्पना है, मात्र. वर्तमान काल हमारे जागृत चैतन्यता की वास्तविकता है।

हमारी चाहत, इच्छायें अत्यधिक है। सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी उन चाह, इच्छाओं की पहचान करें जो हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमारी सबसे बड़ी चाह इच्छा या आवश्यकता क्या है? सर्वप्रथम हम उसे जानें, पहचानें । हमारी सबसे बलवती इच्छा क्या है आईए इस उदाहरण से समझें कि किसी आश्रम में शिष्यगण अपने गुरू से हमेंशा यह बात कहते रहते थे कि इनकी इच्छा ईश्वर के दर्शन करने की है । गुरू जी हँस कर टाल देते थे और शिक्षा देते थे कि ठीक से पहचान करो कि तुम्हारी सबसे बड़ी इच्छा या आवश्यकता क्या है। शिष्यगण यह समझते थे कि गुरू जी उन्हें बराबर

टाल दिया करते हैं और गुरू जी मुस्कुराते रहते थे । एक दिन गुरू जी अपने शिष्यों के साथ नदी में स्नान कर रहे थे एक शिष्य जो अपनी माँग बराबर प्रार्थना के रूप में दोहराता रहता था, गुरू जी ने उसकी गर्दन को पकड़ा और सिर को पानी में डुबो दिया, इतनी देर तक कि शिष्य श्वास लेने के लिये छटपटाने लगा और तब गुरू जी ने पूछा कि जब तुम्हारा सिर पानी के अन्दर था तो तुम्हारी सबसे बड़ी इच्छा, आवश्यकता क्या थी ? श्वास लेने की इच्छा हो रही थी शिष्य ने उत्तर दिया । ऐसी ही गहरी इच्छा ईश्वर से मिलने की होनी चाहिये तभी उनकी प्राप्ति होगी, गुरू जी ने उसे ज्ञान दिया। इसी प्रकार अपनी प्राथमिक आवश्यकता के प्रति जागरूकता होनी चाहिये।

करूणा रेकी का सिंबल ई–आह–वाह आपके वास्तविक भौतिक आवश्यकता की पहचान में आपकी सहायता करता है । प्राथमिकता के आधार पर अपनी सभी इच्छाओं एंव आकांक्षाओं की सूची बनाएं कभी–कभी मन में कुंठा होने लगती है कि कौन सी आवश्यकता को प्राथमिकता दी जाय । उदाहरण स्वरूप पुत्री या बहन का विवाह करना है । परन्तु उसमें एक दो वर्ष की कमी आ सकती है पुत्र को नया व्यापार कराना है । नये फ्लेट की किश्त चुका कर गृह प्रवेश करना है, पुत्र को डोनेशन देकर टेक्नीकल शिक्षा के लिये भेजना है । एकाग्रता के साथ अपनी ऐसी सभी आवश्यकता एवं इच्छा पर विचार कर आज्ञा चक्र में एक के बाद दूसरी आवष्यकता या इच्छा को पूरी होते हुये अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखें, और तब अपने आज्ञा चक्र में ई–आह –वाह सिंबल करीब सात मिनिट तक बनाएं। दूसरी या तीसरी बार इस क्रिया के पश्चात आपको यह अर्न्तज्ञान होने लगेगा कि आपकी कौसी सी इच्छा आवश्यक है। इस प्रकार यह सिंबल हितकारी साबित होगा यह सिंबल आपकी भौतिक आवश्यकता से प्रभावित नहीं होगा, अपनी हितकारी आवश्यकता की प्राथमिकता का ज्ञान होने के उपरान्त उसकी पूर्ति होते हुए अपने आज्ञा चक्र में काल्पनिक दृष्टि से देखें एवं क्रिया सिंबल अपने आज्ञा चक्र में बनाएं ।

यह सिंबल आपकी उस भौतिक आवश्यकता या योजना को कार्यान्वित होने में सहायक होगा । मान लीजिये आपकी पुत्री का विवाह करना है । विवाह की तिथि समीप आ रही है और आवश्यकतानुसार धन की व्यवस्था नहीं हो सकी है क्या किया जाए? हाँ, अमुक भूमि या प्लॉट बेकार पड़ा है अगर वह बिक जाय तो आवश्यकतानुसार धन की उपलब्धि संभव है । परन्तु कितने दिनों से प्रयास कर रहे हैं वह प्लॉट उचित मूल्य पर नहीं बिक रहा है परन्तु जैसे ही आपने उसे अपनी किसी आवश्यक परियोजना से जोड़ा भूमि का वह प्लॉट आपकी आपकी अपनी योजना का अंग बन गया । जिसकी बिक्री के पश्चात पुत्री का विवाह धूमधाम से हो सकेगा । अब उस आशय की परियोजना बनाऐं जैसे की आप अपने आज्ञा चक्र में काल्पनिक दृष्टि से देख रहे हैं कि पुत्री का रिश्ता अमुक लड़के के साथ तय हो गया है कितनी अच्छी जोड़ी रहेगी उनकी सगाई हो गई है, विवाह की तैयारी चल रही है , वह प्लॉट सफेद प्रकाश से ढका हुआ है उसकी बिक्री करनी है जिससे पुत्री का विवाह धूमधाम से हो सके अनेक खरीददार आ रहे हैं उनमें से एक समुचित राशि पर प्लॉट क्रय करना चाहते हैं और उस राशि पर आपके भूमि के प्लॉट की बिक्री हो गई है और प्राप्त धन राशि से पुत्री का विवाह धूमधाम से हो गया है । इसके पश्चात जोनर क्रिया और ई–आह–वाह और सिंबल अपने आज्ञा चक्र में पन्द्रह मिनिट सुबह और पन्द्रह मिनिट सांयकाल बनाएं ।

इस कार्य के लिये बॉक्स का उपयोग भी कर सकते हैं एक छोटे से कागज के टूकड़े पर लिखें कि अमुक प्लॉट अमुक तिथि तक अच्छे मूल्य पर बिक गया है और प्राप्त धन से पुत्री का विवाह धूमधाम से हो गया है । प्लॉट की बिक्री के लिए कोई स्पष्ट तिथि जो उचित लगे बॉक्स पर अंकित करें अब उस कागज के पीछे तीनों सिंबल जोनर क्रिया एवं ई–आह–वाह बनाएं एवं उनका नाम लिखने की आवश्कता नहीं है कागज को ऐसे मोड़ें कि जो लिखा गया है वह अन्दर रहे और सिंबल ऊपर की ओर रहे। अब इस कागज को किसी छोटी सी

प्लास्टिक या अन्य किसी ऐसी डिबिया में रखें कि वह आपके हथेली में आ जाए डिबिया को पहले उपयोग में लाने के पहले उसे नमक के पानी में 24 से 48 घंटे तक डुबो कर रखें और तब उसे नमक के पानी में से निकाल कर साफ पानी ये धोकर सुखा लें और अब उसमें अपने मकसद वाला कागज रखें। इस डिबिया को सुबह एवं सांयकाल अपनी दोनों हथेलियों में रखकर जो कार्य आपने कागज पर लिखा है उसे अपने आज्ञा चक्र में साकार होते हुये अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखें और अब वही तीनों सिंबल एक के बाद एक लगातार 15 मिनिटों तक अपने आज्ञा चक्र में बनाते रहे। सिंबल बनाकर तीन बार उनका नाम लेना नहीं भूलें, जैसे आपके आज्ञा चक्र में जोनर सिंबल बनाया तो तीन बार जोनर जोनर जोनर मन ही मन करने के बाद ही अगला सिंबल बनाएं और तीन बार उनका नाम लें । ई–आह–वाह सिंबल का उपयोग भूखण्ड के उपचार के लिये भी किया जाता है । जैसे किसी भूखण्ड पर अक्सर बाढ़, सूखा, भूकम्प इत्यादि प्राकृतिक आपदा का प्रभाव पड़ता है, ऐसे भूखण्ड जो लाभदायक नहीं हो रहे हैं जैसे किसी भूखण्ड पर फैक्ट्री, आवासीय भवन का निर्माण कराया गया है पर लगातार उस फैक्ट्री या आवासीय स्थल पर परेषानियाँ, घोर कठिनाईयाँ एक के बाद दूसरी आ रही है तो ऐसे भूखण्डों का उपचार भी सिंबल ई–आई–वाह से किया जा सकता है।

यह सिंबल व्यक्ति को उसकी वास्तविकता का ज्ञान कराता है। जैसे परिवार में बालक या बालिका पढ़ने में ध्यान नहीं देते हैं टी.वी. या अन्य मन पसंद खेलों में व्यस्त रहते हैं उन्हें पढ़ाई–लिखाई में दिलचस्पी नहीं है। इस सिममबल के द्वारा उन्हें वास्तविकता का ज्ञान कराते हैं कि अगर वे पढेंगे– लिखेंगे नहीं तो बड़े होकर साधारण कार्य के योग्य भी नहीं रहेंगे। इसी प्रकार परिवार का कोई वयस्क सदस्य है जिसे घर के काम धन्धे, व्यापार या नौकरी के प्रति दिलचस्पी नहीं है । अपना सारा समय मित्रों के साथ या घुमने फिरने में व्यतीत करते हैं, इस

सिंबल के द्वारा उन्हें अपनी जिम्मेदारी का भान भी कराया जा सकता है।

8. शान्ति

इस सिंबल का प्रयोग सर्वोत्तम संभव परिणामों को सुस्पष्ट करने हेतु किया जाता है । डर एवं दुःस्वप्न को दूर करता है। अशान्ति दूर कर शान्ति की भावना जाग्रत करता है। विगत के घावों को भरकर वर्तमान में सामंजस्य स्थापित कर भविष्य को उजागर करता है।

यह सिंबल हमारे किसी भी कार्य प्रयास को

मूर्तरूप अच्छे रूप में परिणित करने की शक्ति प्रदान करता है। करूणा रेकी के अन्य किसी सिंबल का प्रयोग करने के बाद अच्छे परिणाम के लिए अन्त में इस सिंबल का प्रयोग कर सकते हैं। व्यक्ति का प्रभा मण्डल और अन्य किसी व्यक्ति के नकारात्मक कुटिल एवं अवांछनीय भावनाओं से प्रभावित होकर व्यक्ति को अशान्त कर देता है। यह सिंबल प्रभा मण्डल पर मरहम लगाने का कार्य करते हुए उसमें शान्ति की भावना संचारित करता है। भूत भविष्य और वर्तमान तीनों काल में शान्ति समन्वय प्रदन करता है जैसा कि नाम से ज्ञात होता है यह सिंबल शान्ति प्रदान करने के लिए उपयोग में लाया जाता है अगर कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील है सोते जागते उसके मन में उस कार्य की पूर्ति की कामना है, मन अशान्त बना रहता है जब तक कि उसका वह कार्य पूर्ण नहीं हो जाता । किसी भौतिक कार्य सिद्धि के लिए क्रिया एवं ई–आह–वाह सिंबल का उपयोग किया तो जाता है परन्तु अच्छे से अच्छे परिणाम के लिए शान्ति सिंबल का कोई जवाब नहीं है। मान लीजिए आपको अपनी पुत्री या बहन का विवाह करना है मन पसन्द वर एवं घर मिल गया है, विवाह की तिथि भी निर्धारित हो गई है परन्तु इतना ही काफी नहीं है जैसी कि कहावत है कप और होठों के बीच कोई भी घटना घट सकती है आप चाहेंगे कि बारात समय पर पहूँच जाए उनकी आवभगत के लिए जो भी भरसक प्रयास किए जाएं उसकी सराहना हो बारातियों में कोई शरारती व्यक्ति ना हो जो अनावश्यक ही मीन–मेख निकालकर दूसरों को भी डराता

रहे, विवाह में जो आदान–प्रदान हो वह वर पक्ष को पसन्द आये, इत्यादि अनेक ऐसे छोटे–छोटे मसले हैं जो चिन्ता के विषय बने रहते हैं । विवाह की शोभा बनी रहे और शालिनता के साथ बारात विदा हो जाए । वधू पक्ष की यह सबसे बड़ी कामना रहती है । इस कामना सिद्धि के लिए शान्ति सिंबल का उपयोग अत्यन्त प्रभावी होता है । इसी प्रकार के अनेक ऐसे लक्ष्य या कार्य होते हैं जिनके सुखद और अच्छे परिणाम की कामना रहती है और ऐसे ही कार्यों के लिए शान्ति सिंबल का उपयोग किया जाता है।

शान्ति सिंबल का उपयोग भय को दूर करने के लिए भी करते हैं। नकारात्मक मनोभावनाओं में भय अत्यन्त हानिकारक होता है किसी किसी व्यक्ति में यह देखने में आता है कि बचपन से ही उसके अन्दर अधिक भय की भावना रहती है भय एवं क्रोध या अनावश्यक चिन्ता के संबंध में अनेक उच्च कोटि के रेकी विशेषज्ञों का यह मानना है कि यह नकारात्मक मनोदशा इस जन्म की देन नहीं बल्कि पूर्व जन्मों से चली आ रही है। किस जन्म में इस भाव ने जन्म लिया, इसके जन्म लेने के पीछे क्या कारण था अगर उस अवस्था को देखा जा सके तो इस जन्म में यह क्रोध भय या चिन्ता की मनोदशा समाप्त हो सकती है। विश्व विख्यात रेकी विशेषज्ञ कार्ल एवरडिंग व्यक्ति को उसके पूर्व जन्मों में ले जाते हैं व्यक्ति अपनी किसी एक मनोदशा जैसे क्रोध या भय इत्यादि को जानने का उद्देश्य बनाकर पूर्व जन्मों में जाता है। अपनी बन्द आँखों से वे पिछले किसी जन्म में विचरण करते हुये देखते हैं कि क्रोध, भय इत्यादि किस परिस्थिति में पैदा हुआ ।

क्रोध, भय इत्यादि मनोदषा अगर किसी व्यक्ति में कूट–कूट कर भरी है तो सभी के लिए संभव नहीं है कि वे पूर्व जन्मों में गमन कर अपनी इस मनोदशा से मुक्ति पा सकें। करूणा रेकी का सिंबल शान्ति इतना शक्तिशाली है कि वह किसी व्यक्ति के क्रोध या भय मनोदशा को पूरी तरह से शान्त कर सके चाहे किसी जन्म में क्रोध या भय इत्यादि की मनोदशा उत्पन्न हुई हो ।

व्यक्ति का आन्तरिक प्रभामण्डल उसके शरीर के साथ करीब पाँच इंच की मोटाई में रहता है। रूसी वैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति का आन्तरिक प्रभामण्डल बायोप्लाजमा से बना हुआ है और तत्व का चौथा रूप है, तत्व के तीन रूप हैं ठोस, तरल एवं गैस जैसे पानी के तीन रूप हैं – पानी–भाप–बर्फ । विश्व के मनोदैहिक रोगों के विशेषज्ञ (साईकोसोमेटिक एक्सपर्ट) का यह मानना है कि लगातार नकारात्मक मनोभावों जैसे– क्रोध या चिन्ता,भय, कटुता, दोष बोध, विद्धेष, मन मुटाव इत्यादि के बढ़ते रहने के कारण व्यक्ति के रक्त चाप में एक तरह की रासायनिक प्रतिक्रिया होने लगती है । जब भी कोई रासायनिक प्रतिक्रिया होती है व्यक्ति में पलने वाले नकारात्मक मनोभाव के कारण होती है उससे एक प्रकार का टोक्सिन बनता है यह टोक्सिन व्यक्ति के आन्तरिक प्रभामण्डल में जमा होने लगता है । 3–4 माह में जब आन्तरिक प्रभामण्डल का टोक्सिन पूरी तरह से परिपक्व हो जाता है तो शरीर में रोग के लक्षण प्रकट होने लगते है और चिकित्सक अपने परामर्श के दौरान कहते हैं कि यह लक्षण उच्च रक्तचाप, मधुमेह, दमा, अथ्रईटिस, गठिया इत्यादि किसी रोग का है और तब ता जिन्दगी दवा खाते रहना है । किरलियान नामक एक रूसी ने एक फोटो कैमरा बनाया है जो व्यक्ति के प्रभामण्डल की फोटो लेता है। व्यक्ति के प्रभामण्डल (ओरो) की गन्दगी, टोक्सिन इत्यादि की झलक प्रभामण्डल की फोटो में आ जाती है।

शान्ति सिंबल के लगातार प्रयोग से व्यक्ति के आन्तरिक प्रभामण्डल को शान्त किया जा सकता है। व्यक्ति का प्रभामण्डल जितना ही गन्दा एवं टाक्सिन युक्त रहेगा उतनी ही मानसिक रूप से वह परेषान रहेगा। शान्ति सिंबल का प्रयोग लगातार करते रहने से आन्तरिक प्रभाण्डल शुद्ध साफ और शान्त होने लगता है और आन्तरिक आनन्द की अनुभूति होती है। प्रभामण्डल में जमा होने वाले टोक्सिन का प्रभाव शरीर के स्वास्थ्य किरणों पर भी प्रतिकूल प्रभाव होती है । यह स्वास्थ्य किरणे प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर से शरीर के बाहर करीब दो फीट की दूरी तक

निकलती रहती है । शरीर से निकलने वाली इस स्वास्थ्य किरणों के द्वारा शरीर के अन्दर का मल ,गन्दगी एवं कीटाणु इत्यादि बाहर निकलते रहते हैं, परन्तु जब शरीर के आन्तरिक प्रभामण्डल में टोक्सिन जमा होने लगते हैं तो स्वास्थ्य किरणो पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वे आपस में लिपटकर जट के समान हो जाती है और शरीर के अन्दर की गन्दगी को बाहर उनके द्वारा निकलने का कार्य बन्द हो जाता है। शान्ति सिंबल आन्तरिक प्रभामण्डल में जमा टाक्सिन को जब पिघलाने और हटाने का कार्य करता है तो उसका प्रभाव स्वास्थ्य किरणों पर भी पड़ता है और स्वास्थ्य किरणे सुलझ कर पुनः अपना कार्य करने लगती है।

प्रत्येक व्यक्ति के शरीर से करीब दो से तीन फीट की दूरी तक उसका बाहरी प्रभामण्डल होता है उलटे अण्डाकार । यह बाहरी प्रभामण्डल व्यक्ति के शरीर के चारों ओर लिहाफ की तरह घेर कर उसके कवच का काम करता है। ठण्ड के दिनों में लिहाफ औढ़ने से शरीर की गर्मी लिहाफ के अन्दर बन्द रहती है। साथ बाहर ठंड भी शरीर से दूर रहती है, अगर लिहाफ में जगह जगह छेद हो जाये जहाँ शरीर की गर्मी बाहर निकलती रहेगी वहीं बाहरी ठण्ड भी शरीर के अन्दर आ पहुंचेगी। आन्तरिक प्रभा मण्डल में जमा होने वाले टोक्सिन का प्रभाव बाहरी प्रभामण्डल पर भी पड़ता है शरीर की प्राण शक्ति जो लिहाफनुमा कवच के अन्दर बन्द थी अब इसमें छेद हो जाने के कारण क्षीण होने लगती है। मान लिजिये कोई व्यक्ति कुछ समय की बीमारी के बाद अब स्वस्थ हो गया है परन्तु शरीर दुर्बल और क्षीण हो गया है परिवार वाले चाहते हैं कि वह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करे और उसके लिये पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाती है परन्तु व्यक्ति का शरीर कुछ देर स्वस्थ रहकर पुनः वैसे ही कमजोर और क्षीण हो जाता है । कारण समुचित देखभाल से व्यक्ति ने जो प्राण शक्ति अर्जित की, वह बाहरी

प्रभा मण्डल में हुये छिद्रों के कारण शरीर से बाहर निकल जाती है । शान्ति सिंबल के प्रभाव से शरीर के आन्तरिक प्रभा मण्डल के टाक्सिन पर जब अनुकूल प्रभाव पड़ता है तब बाहरी प्रभा मण्डल में टॉक्सिन के प्रभाव से जो छिद्र हो गये हैं वे भी बन्द होने लगते हैं और व्यक्ति का बाहरी कवच शक्तिषाली बन जाता है।

व्यक्ति के तनावग्रस्त, अशांत, भूतकाल को शान्ति सिंबल मरहम लगाने का कार्य करता है । व्यक्ति की मनोदषाओं पर हुये शोध कार्यों से यह पाया गया कि औसतन व्यक्ति अपने जाग्रत अवस्था का 60 प्रतिशत समय अपने भूतकाल में व्यतीत करता है। अर्थात वह अपने 24 घन्टे में 8 घन्टे सोता है तो जागी हुई अवस्था के 16 घन्टों में 60 समय अर्थात 9) घन्टे से अधिक समय तक अपने भूतकाल में विचरता है । भूतकाल अर्थात पिछले दिनों, महिनों या वर्षों या अमुक मित्र ने कैसे तंग किया, दुश्मन बन कर मेरे को कितनी चोंट पहुंचायी, अमुक रिश्तेदारों ने किस प्रकार धोखा दिया । परिवार में भााईयों ने बंटवारे के समय कितनी ज्यादती की वगैरह बातों की मानसिकता से एक प्रकार का दबाव रहता है परन्तु व्यक्ति का मन अपने आप भूतकाल जो अब इतिहास बन चुका है उसमें भटकता रहता है और तनावग्रस्त हो जाता है । वर्तमान काल में कोई मानसिक तनाव नहीं है शान्ति सिंबल भूतकाल की उन तनावग्रस्त घटनाओं पर मरहम लगाते हुये उनका उपचार करता है जैसे शरीर का ऊपरी घाव जब भर जाता है और

उपचार से पूरी तरह ठीक हो जाता है तो उससे होने वाला दर्द भी गायब हो जाता है । कुछ दिनों बाद व्यक्ति को यह भी ध्यान नहीं रहता कि घाव कहाँ है। उसी प्रकार भूतकाल की दुखद घटनाओं को किसी शक्तिषाली उपचार के द्वारा शान्त कर दिया जाये तो उनकी यादगार मानस पटल से निकल जायेगी और अपने आप उधर ध्यान या मन नहीं भटकेगा मां तनाव भी दूर रहेगा । शान्ति सिंबल इस उद्देश्य से सफल बनता है।

वर्तमान काल को उपहार का समय बताया जाता है कारण अगर आप वर्तमान काल में रहेंगे तो मानसिक तनाव से दूर रहेंगे कारण अगर भूतकाल में तनाव और दबाव है तो भविष्य काल में चिन्ता और फिक्र है इस लिये कहते हैं कि वर्तमान काल उपहार का क्षण है और यही कारण है कि वर्तमान काल को अंग्रेजी में प्रेजेन्ट कहते हैं। प्रेजेन्ट अर्थात उपहार, उपहार का समय इस वर्तमान काल में प्यार करूणा, ममता, कृतज्ञता और प्रसन्नता का भाव मनोदशा में व्याप्त हो जाये तो जीवन में आनन्द की कोई सीमा न रहे और हर और समरूपता बनी रहेगी । शान्ति सिंबल वर्तमान काल में समरूपता स्थापित कर आनन्द की प्रेरणा देता है।

भविष्यकाल तो अन्धकार के गर्भ में है। व्यक्ति का मन उस दिषा में भटकता है जिसकी उसे आकांक्षा है पुत्री का विवाह कैसे होगा । अच्छे वर कहां से आयेगा, सम्पन्न परिवार की मांग अधिक है, अधिक धन की आवश्यकता होगी व्यवस्था कहाँ से होगी। बहन का विवाह

करना है वह कैसे होगा, अभी तक अपना मकान या फ्लेट नहीं हुआ है कब तक किराये के मकान में रहेंगे पुत्र की उच्चशिक्षा के लिए धन कहाँ से आयेगा । कैसे पूरा होगा चिन्ता भविष्यकाल में रहती है। अपनी आवश्यकताओं के प्रति जागरूक रहने हेतु शान्ति सिंबल का प्रयोग करें शान्ति सिंबल भविष्य की दुःश्चिन्ताओं से मुक्त करते हुये इच्छा पूर्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा। शान्ति सिंबल व्यक्ति के भूतकाल वर्तमानकाल भविष्यकाल सुखद बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

9. होसाना

करूणा रेकी का यह नोवाँ सिंबल है । पाया जाता है कि कभी कोई कार्य चलते चलते बीच में ही रूक जाता है जैसे की मोटर गाड़ी चलते चलते बीच में ही रूक जाती है अब गाड़ी को आगे बढ़ाने के लिए मोटर गाड़ी के मुसाफिरों को उतर कर धकेलना पड़ेगा। उसी प्रकार कोई कार्य जो बीच में रूक गया हो उसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये कोई शक्तिशाली सिंबल का प्रयोग करना चाहिये । उदाहरण कें लिये पुत्री के विवाह की बात कई जगह चलती है परन्तु कोई न कोई व्यवधान आ जाता है पुत्र को नौकरी मिलने में बाधा , नौकरी में उन्नति में बाधा किसी सम्पत्ति के क्रय–विक्रय में बाधा अनेक कार्य हैं जो किसी व्यवधान के कारण रूक जाते हैं तो गाड़ी आगे बढ़ती ही नहीं है । ऐसे सभी कार्यो को आगे बढाने के लिए होसाना का प्रयोग करते है। जैसा कि पिछले अध्यायों में बताया गया है सांसारिक अथवा भौतिक सुख प्राप्ति के लिये क्रिया सिंबल का प्रयोग करते है। । यहाँ क्रिया और होसाना सिंबल का प्रयोग करते हैं वहीं किसी नये भौतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये क्रिया सिंबल का प्रयोग करते हैं, किसी चल रहे कार्य के आगे बढ़ने पर जब कोई बाधा आती है जिसके कारण वह होने वाला कार्य नहीं हो पाता है । तब होसाना सिंबल का प्रयोग किया जाता है।

रूके हुये कार्य की पूर्ति के लिये जोनर के साथ क्रिया लगाते हुये होसाना का उपयोग करते हैं इस अवस्था में क्रिया के बाद ई–आह–वाह का उपयोग नहीं करते हैं । होसाना का प्रयोग मास्टर सिंबल के रूप में

जोनर के पहले भी करते हैं । होसाना जोनर और तब क्रिया, अच्छा होगा कि आप दोनों ढ़ंग से प्रयोग करें जिसमें आपको अच्छा परिणाम मिले उस विधि को अपनाईये ।

होसाना का उपयोग करने के पहले आप अपने आज्ञा चक्र में उस कार्य को देखिए तो चलते चलते रूक गया है। मान लिजिये कोई फैक्ट्री बीमार पड़ने लगती है बिजली की आपूर्ति में आधा आ गई, कच्चे माल की कमी हो गई, श्रमिक विवाद हो गया या बने हुये माल की खपत और बिक्री बहुत कम हो गई । फैक्ट्री के कार्य को आगे बढ़ाना है आप आपने आज्ञा चक्र में उस फैक्ट्री को अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिये वह सफेद प्रकाश में ढकी हुई है दिन–रात काम हो रहा है किसी चीज की कमी नहीं है , बिजली, पानी, कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। श्रमिक मन लगाकर काम कर रहे है। सभी व्यवस्था बहुत अच्छे ढंग से की जा रही है । उत्पादन बहुत बढ़ गया है तैयार होकर माल बाहर लगातार जा रहा है । सभी बातों को अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिये जब यह सभी दृष्य आज्ञा चक्र से हट जाता है और आप होसाना सिंबल का उपयोग जोनर और क्रिया के साथ लगातार नित्य करीब बीस मिनट तक करें, या रेकी बॉक्स बनायें, फैक्ट्री की बीमारी अवश्य दूर होगी ।

होसाना सिंबल का उपयोग स्वतंत्र रूप से अकेले भी कर सकते हैं। दूरस्थ रेकी के लिए मात्र जोनर सिंबल लगाना अपने रूके हुये कार्य को अपने आज्ञा चक्र में काल्पनिक दृष्टि से सफेद प्रकाष में

देखिये कि वह कार्य पूरा हो गया है उसके बाद जोनर के साथ होसाना का प्रयोग करिये ।

10. आध्यात्म (ॐ)

आध्यात्म एक धार्मिक नियम है। संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है ''जीवन का उद्देश्य'' प्रत्येक व्यक्ति ने किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन्म लिया है। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई ऐसी निपुणता छिपी रहती है जो अन्य किसी भी व्यक्ति में नहीं है । यह निपुणता क्या है इसकी पहचान आवश्यक है । इस निपुणता को जाहिर कराने की भी होती है और जब इस आवश्यकता को व्यक्ति की अपनी निपुणता से मिला दिया जाता है तो स्वतः प्रचुरता, सम्पन्नता प्रवाहित होने लगती है । लेकिन दुर्भाग्य यह है कि ताजिन्दगी अधिकतर लोग अपनी इस अनोखी निपुणता की पहचान ही नहीं कर पाते हैं और सामान्य स्तर का जीवन व्यतीत करते हैं। बचपन से ही यह शिक्षा मिलनी चाहिये कि तुम अपनी निपुणता की पहचान करो, देखो गौर करो कि किस बात में तुम्हारी निपुणता है जो ओर बच्चों में या व्यक्ति में नहीं है। तुम अपनी निपुणता को एक अनोखे ढंग से व्यक्त करते हो जो दूसरा कोई नहीं कर पाता है। किस प्रकार तुम मानवता की सेवा कर सकते हो तुम्हारी प्रत्येक अनोखी निपुणता मानवता की सेवा से जुड़ी हुई है, तुम दूसरे को क्या दे सकते हो, निश्कपट,निश्छल भाव से कैसे मानवता की सेवा कर सकते हो, यही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य है, तुम्हारी निपूर्णता है, यही आध्यात्म और धर्म है।

आध्यात्म का यह अर्थ नहीं है कि दिन भर बैठ कर मंदिर में पूजा पाठ करते रहो, घण्टा बजाते रहो, और बात–बात में लोगों को दुख

पहुँचाओ, नैतिकता के स्त्र पर नीचे कार्य करो, येन–केन प्रकरेण धनोपार्जन करने जाओ यह अधर्म है, आध्यात्म से बहुत दूर।

अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानना है। इस पहचान के लिए सर्वप्रथम अपने अन्दर झांकना है और अपनी अन्तर्रात्मा को पहचानना है कि क्या यही हमारा वास्तविक और आध्यात्मिक रूप है? या हमारे आध्यात्म ने ही मानव शरीर किसी विशेष उद्देष्य के लिए धारण किया है। हम वह मानव शरीर नहीं है जो कभी –कभी आध्यात्मिक अनुभव करता है। हमारे जीवन का मुख्य उद्देष्य ही कि हम अपनी अन्तर्रात्मा अथवा अपने आध्यात्मिक शरीर की पहचान करें और जाने कि हमारे अन्दर ईश्वर जो मूर्तिमान है उसके देवत्व को कैसे प्रकट करें ? जैसे ही हम स्वयं अपनी यह पहचान प्राप्त कर अपवने देवत्व को प्रकट करते हैं वैसे ही पूरा संसार हमारा अपना परिवार प्रतीत होगा और हम लग जायेंगे अपने इस परिवार की सेवा में, हमारे अन्दर यह तड़प पैदा होगी कि हम उन सभी की सहायता करें जो हमारे सम्पर्क में आते हैं और जब हम अपनी निपुणता के साथ मानवता की सेवा करते हैं तो हम अपने जीवन के उद्देष्य की ओर अपना कदम बढ़ाने लगते हैं और यही से प्रारंभ होती है प्रकृति अनुकृपा जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुये हमें सफलता का मार्गदर्शन करती है। तब हम अपने देवत्व को प्राप्त कर यह नहीं कहते हैं कि हमें क्या चाहिये बल्कि यह विचार करते हें कि दूसरों की कैसे सेवा करें, उनकी सेवा के लिए अपनी निपुणता का कैसे उपयोग करें तो प्रकृति ने हमारे लिए सम्पन्नता का प्रचुरता का मार्ग खोला है वह और भी प्रशस्त और स्थाई होता जाता है।

हम जब अपने आत्मज्ञान को अपने उच्च आध्यात्मिकता से प्राप्त करते हैं तो हमारा अहम समाप्त होने लगता है और तब हम यह नहीं सोचते कि इस बात में हमारा व्यक्तिगत लाभ क्या है बल्कि इस बात का उत्तर ढूंढते हैं कि हम दूसरों की सहायता कैसे कर सकते हैं दूसरों की सेवा भाव में बड़ी विलक्षण शक्ति है, सर्वप्रथम यह हमारे अहम को समाप्त करती है।। अहम हमारे अन्तःकरण के बहुत अन्दर छिपी हुई एक ऐसी नकारात्मक मनोभावना जिसकी व्यक्ति को सूची बनाने को कहें तो वह स्वीकार कर सकता है कि उसे क्रोध आता है, चिन्ता फिक्र लगी रहती है भय भी लगता है। परन्तु उसके अन्दर अहम भाव बिल्कुल ही नहीं है । अहम एक ऐसा मनोभाव है जो अक्सर उभर कर व्यक्ति को नीचे गिराने में लगा रहता है । हमारे अन्तकरण में जब यह भावना उठने लगती है कि कैसे हम दूसरों की सहायता करें तो हम अपनी अन्तरात्मा से विचार–विमर्श में लग जाते हैं और जब हम बारम्बार अपनी अन्तरात्मा को इस प्रकार जागृत करते हैं तो धीरे–धीरे पूरा विश्व हमारे लिए परिचित, अपना परिवार प्रतीत होने लगता है और तब हम ‘‘ वासुदेव कुटुम्बकम’’ का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

हमने मनुष्य रूप क्यों धारण किया है हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? अगर हम जानना चाहते हैं तो सर्वप्रथम अपनी अन्तरात्मा में झाँककर उसमें डूब जाना होगा और जैसे–जैसे इस आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ेंगे हमारा अहम स्वतः पिघलता जायेगा । इसके साथ ही साथ हमें यह भी जानना है कि हमारी निपुणता क्या है। एक आत्मिक प्रसन्नता से हम ओत–प्रोत होने लगते हैं और जब हम अपनी उस विशेष

योग्यता से मानवता की सेवा में लग जाते हैं। तब हम अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लेते हैं और आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं और शिखर की राह में आपके लिए सम्पन्नता और प्रचुंरता अपनी आँखें बिछाये रहेगी । अपने आप सभी साधन और सम्पत्ति की प्राप्ति का मार्ग प्रषस्त होने लगेगा।

आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त करने का एक अन्य मार्ग है और वह है साधना । करूणा रेकी का आध्यात्मिक सिंबल आपको उस राह की ओर ले चलता है । व्यक्तिगत साधना का मार्ग कठिन है, ध्यान में बैठने के साथ तरह–तरह की बातें मन में आने लगती है और एकाग्रता को भंग करने लगती है साधना के लिए एकाग्रता आवश्यक है, करूणा रेकी का आध्यात्मिक सिंबल एक अत्यन्त शक्तिशाली सिंबल है जो व्यक्ति को सांसारिक बन्धनों के प्रति अरूचि पैदा कर इच्छा, कामना एवं वासना से मुक्त कराता है।

करूणा रेकी के आध्यात्मिक सिंबल की अनुशंसा मैं उन लोगों के लिए करता हूँ जो अपनी सांसारिक जिम्मेदारी से मुक्त है और आत्म–दर्शन करना चाहते हैं। यह सिंबल सांसारिक बंधनों के प्रति विरक्ति पैदा करता है और आध्यात्मिक साधना की ओर मानसिक झुकाव को धीरे–धीरे बढ़ाता है। इस सिंबल के उपयोग के साथ धीरे धीरे व्यक्ति साधना के मार्ग पर तीव्रता से प्रगती करता है और अगर इसके साथ ही साथ व्यक्ति सांसारिक बन्धनों से बंधे भी रहना चाहता है तो कठिनाईयाँ खड़ी हो सकती है और सांसारिक कार्यों में बाधा

भी आ सकती है, कारण यह सिंबल उच्च अर्न्तज्ञान के लिए है और एक प्रकार की विरक्ति पैदा करता है । दोनों ही बातें इस सिंबल के साथ होने में कठिनाई हो सकती है।

जो लोग अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो गये हैं और एकाग्रचित होकर ध्यान साधना करना चाहते हैं उन्हें प्रारंभ में अत्यन्त कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है कारण एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगाना कोई सहज कार्य नहीं है और यही कारण है कि लो ध्यान साधना के पथ पर चाह कर भी नहीं चल पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए करूणा रेकी का आध्यात्मिक सिंबल अत्यन्त सहायक होता है । लगातार अपने ऊपर इस सिंबल का उपयोग करने पर असीम आनन्द, शान्ति एवं एकाग्रता का बोध होता है। धीरे–धीरे ज्ञान चक्षु खुलने लगते हैं फिर आन्तरिक चेतना प्रकट होने लगती है । व्यक्ति अपनी अन्तररात्मा में झाँकते हुए हम कौन हैं की खोज में लग जाता है।

अपनी अन्तरात्मा को चहचान कर आध्यात्म की ओर बढने का यह आध्यात्मिक सिंबल एक अत्यन्त सहज मार्ग है। अपने ऊपर उपयोग करते हुए व्यक्ति शान्त, एकाग्र मन से ध्यानावस्था में पहुँचने लगता है, धीरे–धीरे सांसारिक बन्धनों व माया से निरक्ति होने लगती है परमानन्द की अवस्था प्राप्त होने लगती है ।

सिंबल का उपयोग

करूणा रेकी के सिंबल जितने आसान हैं उतने ही शक्तिशाली भी हैं। सिंबल की प्रेक्टिस भी अत्यन्त आसान है, परन्तु प्रेक्टिस भरपूर कर लेना चाहिए। प्रेक्टिस के दौरान पहले सिंबल को हवा में बनाएँ । हवा में सिंबल बनाने के लिए पाँचों अंगुलियों को एक साथ मिलाकर, चोंच के आकार में ले आयें करूणा रेकी के सभी सिंबल श्रद्धा एवं आदर के साथ बनाये जाते हैं। एक अंगुली से सिंबल बनाना अश्रद्धा का द्योतक है। सीधी अंगुलियों को चोंच के आकार में लाकर सिंबल हवा में तब तक बनायें जब तक वे याद नही हो जायें । इसके पश्चात उन्हें कागज पर बनायें, परन्तु यह याद रहे जब भी कोई सिंबल बनायें तो तीन बार उनका नाम अवश्य उच्चारण करें । सिंबल की प्रेक्टिस चल रही है इस बीच रेकी मास्टर " एप्टयूनमेन्ट" प्रारंभ कर देते हैं । एप्टयूनमेन्ट के दौरान कम से कम स्टूडेन्टस जाते हैं कमरे में जाकर अपने मन को शान्त रखें और चाहें तो किसी मंत्र का उच्चारण कर सकते हैं। मेरे विचार से यह शुभंकर विचार दोहराते रहना लाभकारी है। " मैं सभी को प्यार करता हूँ। सभी मुझे प्यार करते हैं और मैं पूरी तरह सुरक्षित हूँ। " "एन्टयूनमेन्ट" के दौरान किन्हीं व्यक्तियों को अच्छी अनुभूति होती है, किन्हीं को चक्रों के रंग का दर्शन हो सकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सभी के साथ ऐसा हो । करूणा रेकी के प्रत्येक शक्तिशाली सिंबल देवी शक्ति से कार्य करते हैं और प्रत्येक सिंबल अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं, अगर अनेक सिंबल एक के बाद लगा दिये जाते हैं और एक दूसरे के शक्ति क्षेत्र में अतिक्रमण करने लगते हैं अतएवं

कभी भी करूणा रेकी के दो, अधिक से अधिक तीन सिंबल का उपयोग एक साथ नहीं होना चाहिये। अगर अन्य सिंबल का उपयोग आवश्यक हो तो कुछ देर बाद करना श्रेयस्कर होता है।

उसुई रेकी और करूणा रेकी में एक मूल फर्क है वह यह कि उसुई रेकी में शक्ति ऊपर से सहस्त्रार चक्र में प्रवेश करती है और वहाँ से आज्ञा चक्र , विशुद्ध चक्र में होते हुये हृदय चक्र में पहुँचती है। जबकि करूणा रेकी शक्ति, रेकी देने और लेने वाले दोनों को चारों ओर से पूरी तरह ढक लेती है और यही कारण है कि यदाकदा करूणा रेकी देते या लेते समय ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति किसी आवरण से ढका हुआ है । करूणा रेकी में कृतज्ञता अर्पित करने के बाद अपनी काल्पनिक दृष्टि से यह देखना चाहिये कि स्वयं आप और रेकी लेने वाले सफेद चमकीले प्रकाश से ढके हुये हैं । कल्पना बहुत आसान है, आप अपनी आँखें बन्द करके यह सोचिये कि रात्रि का समय है आप सड़क से जा रहे हैं सामने से कोई मोटर गाड़ी आ रही है और उसका प्रकाश आपके शरीर के अगले भाग पर पड़ रहा है, और आप अपने आगे और पीछे चारों ओर से प्रकाष से ढके हुये हैं, परन्तु यह कि मोटर गाड़ी का प्रकाश हल्का पीला होता है और जिस प्रकाश से आप ढके हुये हैं वह चमकीला सफेद है।

रेकी से ओत–प्रोत होने के बाद आपका आज्ञा चक्र अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है।, इतना शक्तिशाली कि आप समय एवं दूरी से पूरे विश्व में कही भी किसी भी स्थान या व्यक्ति को आप चक्र की शक्ति

से रेकी भेज सकते हैं। अब सिंबल प्रारंभ करने के पूर्व अपने आज्ञा चक्र में उस व्यक्ति या स्थान को अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिये जिसे या जहाँ आप रेकी भेजना चाहते हैं । जिस व्यक्ति या स्थान को आपने पहले देखा है उसका ध्यान करने पर वे आपकी आँखों में आ जायेगी उन्हें आप आज्ञा चक्र में अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिये। अगर किसी ऐसे व्यक्ति या स्थान को रेकी भेजना है जिन्हें आपने कभी देखा नहीं है तो उनकी फोटो को ध्यान से देखिये । अब अपनी आँखें बन्द करिये, उस पर ध्यान केन्द्रित करिये, अगर ध्यान में नहीं आये तो एक दो बार फोटो को पुनः देखिये अब अपनी आँखें बन्द करने पर उनका ध्यान करने से उनकी शक्ल उभर कर आपके सामने आयेगी और तब उन्हें अपने आज्ञा चक्र में देखिये। जैसे ही वह व्यक्ति या स्थान आपके आज्ञा चक्र में आए आप अपने काल्पनिक दृष्टि से देखिए कि वह सफेद चमकीले प्रकाश से ढका हुआ है । अब यह विचार करिये कि उस व्यक्ति या स्थान को किस उद्देश्य से रेकी देना है, मन में यह विचार लाईये । रेकी एक सकारात्मक ऊर्जा है और रेकी प्रारंभ करने के पूर्व ही सकारात्मक परिणाम वाले विचार होने चाहिये। अगर किसी व्यक्ति को आपने देखा नहीं है और फोटो भी नहीं है तो उनके पते पर रेकी भेजी जा सकती है, शायद यह बात कुछ अटपटी लगे। उसई रेकी प्रणाली में ‘‘लाईट सर्किल‘‘ के द्वारा किसी भी व्यक्ति को जो किसी भी स्थान पर रहते हों, रेकी भेजी जा सकती है, लाईट सर्किल संचालक उस व्यक्ति का नाम, उम्र शहर का नाम और उनके रोग,व्याधि का नाम देते हैं और लाईट सर्किल में उपस्थित सभी व्यक्ति तीन बार यह कहते हैं कि वह

व्यक्ति रोग मुक्त हो गये हैं और ठीक उसी समय वह व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि एकाएक उन्हें कोई शक्ति प्राप्त हुई है और वे आराम महसूस करते हैं। लाईट सर्किल में उपस्थित एक दो व्यक्ति ने उस व्यक्ति को पहले देखा होगा और मात्र नाम एवं पते के सहारे रेकी उन तक पहुँच गई।

व्यक्ति, स्थान या उद्देष्य या सकारात्मक परिणाम अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखते हुए अब रेकी सिंबल बनाना प्रारंभ करें । सिंबल की प्रत्येक लाईन बनाएं न कि उसकी तस्वीर देखें।

करूणा रेकी के प्रयोग

1. दूर का उपचार –

दूर के उपचार के लिए जोनर सिंबल का उपयोग करते हैं। अपने आज्ञा चक्र में जोनर सिंबल बना कर तीन बार जोनर, जोनर मन ही मन बोलें तब अगला सिंबल बनाएं। यूं तो दूर की चिकित्सा या किसी कार्य के लिए जोनर सिंबल को प्रारंभ में ही बनाना है, परन्तु बीच–बीच में ध्यान भटक जाता है अतएंव विशेषज्ञों का यह परामर्ष है कि बीच बीच में भी जोनर सिंबल बना लिया जाय ।

2. अपने पूर्वजों या स्वयं के पूर्व कर्मों से मुक्ति –

जोनर सिंबल में यह विलक्षण शक्ति है कि अगर आपके किसी पूर्वज को कोई श्राप मिला था जिसका प्रतिकूल प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है तो जोनर सिंबल उस श्राप से वर्तमान पीढ़ी को मुक्त करता है । यह परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने मन में यह विचार लाना होगा कि अगर हमारे पूर्वजों को मिले किसी श्राप के कारण यह कष्ट है तो वह दूर हो गया है।

3. रोग व्याधि –

करूणा रेकी में सभी रोग व्याधियों के लिए हालू सिंबल का उपयोग किया जाता है । अगर दूर का उपचार करना है तो हालू के पहले जोनर लगाना होगा । अगर रोग ग्रस्त व्यक्ति अपने रोग व्याधि के कारण बहुत कमजोर होकर चिड़चिढ़े हो गये हैं, क्रोध या आवेश में आ जाते हैं तो उनके लिए अपनी काल्पनिक दृष्टि से आज्ञा चक्र में यह देखिये कि वे प्रेम एवं ममता से भरे हुये हैं सभी से हँस–हँस कर प्यार से बातें कर रहे हैं और हालू के बाद हर्थ सिंबल लगाईये। अगर अपनी बीमारी के कारण व्यक्ति बहुत निराश हो गए हैं कि वह नहीं बचेंगे तथा असन्तुलित हो गये हैं तो हालू के बाद हर्थ न लगाकर रामा सिंबल लगाईये अगर रोग ग्रस्त व्यक्ति बहुत अशान्त, बेचैन हो गये हैं, उन्हें भय लगता है, रात्रि में बुरे बुरे सपने दिखाई देते हैं तो हालू हर्थ के तुरन्त बाद शान्ति सिंबल का उपयोग करिये। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जोनर सिंबल का कार्य सेतु के रूप में जब लिया जा रहा है तो विशेष परिस्थिति में हालू, हर्थ, रामा या हालू हर्थ, शान्ति या हालू रामा शान्ति इत्यादि तीन सिंबल लगा सकते हैं।

4. मरणासन्न को रेकी –

कभी–कभी कोई ऐसे रोग ग्रस्त व्यक्ति देखने में आते हैं जो अपने रोग के कारण बहुत कष्ट में हैं, उनकी हालत बहुत गम्भीर चल रही है परन्तु उनके प्राण नहीं मिकल रहे हैं, परिवार या अन्य लोग ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि इनका प्राण निकल जाये और इन्हें कष्ट से मुक्ति मिल जाए। इस स्थिति में जोनर के साथ हर्थ, नोसा और शान्ति सिंबल का उपयोग कर सकते हैं, परन्तु यह रेकी निश्छल मन से होनी चाहिये, न कि किसी अदावत वश कि चलो अच्छा मौका है , दे देते हैं रेकी कि उनके प्राण निकल जाएं।

बुरी लत से छुटकारा दिलाने के लिये हर्थ सिंबल अत्यन्त प्रभावी पाया गया है । अगर आप अपने परिवार, रिश्तेदार या किसी की कोई बुरी लत करूणा रेकी द्वारा छुड़वाना चाहते हैं तो इस बात की चर्चा किसी से न कीजिये। जिस व्यक्ति की बुरी लत आप छुड़ाना चाहते हैं अगर उसे मालूम हो जायेगा तो अपनी इच्छा शक्ति को बलवती करते हुये अपनी लत पर अड़े रहने की जिद पर बने रह सकता है प्रश्न उठ सकता है कि यहाँ न तो रेकी मांगी जा रही है और न कोई फीस दे रहा है, रेकी क्यों की जाए। पहली बात तो यह कि अगर आप अपने परिवार में किसी की बुरी लत छुड़ाने के लिए रेकी दे रहे हैं तो फीस का प्रश्न नहीं उठता और अगर परिवार के बाहर में रहते हैं तो अपनी मनो–भावनाओं को संतुष्ट करने और अपने किसी ईष्ट मित्र या रिश्तेदार को बर्बादी से बचाने के लिए नेक उद्देश्य से ऐसा कर रहे हैं।

जिस व्यक्ति की आप कोई बुरी लत छुड़ाना चाहते हैं उन्हें अपने आज्ञा चक्र में अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिए, वे सफेद चमकीले प्रकाश से ढके हुये हैं, जो भी लत उनकी हो, मान लिजिये शराब की लत है,आप अपनी काल्पनिक दृष्टि से अपने आज्ञा चक्र में उन्हें देखिये कि उनको शराब अच्छी नहीं लगती है , उन्होने शराब छोड़ दी है और अब वे बड़े प्रसन्न एवं शान्त रहें इसके लिए शान्ति सिंबल बनाईये, उन्हें संतुलित रखने के लिए शान्ति के पहले रामा सिंबल लगा सकते हैं इस प्रकार आप उन्हें सुबह और शाम पन्द्रह–पन्द्रह मिनट रेकी दें, ग्यारह से इक्कीस दिनों के अन्दर आपको सकारात्मक परिणाम मिलेगा। शराब न होकर अगर कोई अन्य बुरी लत है तो शराब के बदले उसे देखिए कि वह बुरी लत छूट गई है।

5. चक्रों का सन्तुलन –

व्यक्ति के प्रमुख सात चक्रों में से कोई असंतुलित हो जाता है तो इसका प्रभाव अन्य चक्रों पर भी पड़ता है और वे भी दोषपूर्ण कार्य करने लगते हैं। व्यक्ति असंतुलित होने लगता है । सात प्रमुख चक्रों में चार चक्र अर्थात सहस्त्रार चक्र से हार्ट चक्र आध्यात्मिक एवं स्वाधिष्ठान चक्र और मूलाधार चक्र सांसारिक चक्र की परिभाषा में आते हैं। अधिकतर यह देखा जाता है कि आध्यात्मिक एवं सांसारिक चक्रों में असंतुलन हो गया है । जिसके कारण व्यक्ति कभी बीमार कभी ठीक है, कभी अच्छा व्यवहार करता है तो कभी नैतिकता से नीचे चला जाता है उसे कोई भी ऐसी बात बर्दाश्त नहीं है जो उसके लिए अप्रिय हो, मानसिक नकारात्मकता के कारण मनोदैहिक रोग का प्रकोप होने लगता है । मूलाधार चक्र के असन्तुलित होने के कारण जीवन शक्ति कमजोर पड़ने लगती है । धनाभाव पारिवारिक कलह, आपसी विवाद बढ़ने लगते हैं प्रचुरता सम्पन्नता समाप्त हो रही है इत्यादि अवस्थाओं में रामा सिंबल का प्रयोग करते हैं। अपने आज्ञा चक्र में उस व्यक्ति को सफेद चमकीले प्रकाष से ढका हुआ देंखें कि अब पूरी तरह से संतुलित, प्रसन्न है, अपने कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभा रहा है, उसके सभी चक्र सन्तुलित हैं और तब जोनर के साथ रामा सिंबल बनाएं। वह शान्त रहे इसके लिये रामा के बाद शान्ति सिंबल का उपयोग कर सकते हैं। नित्य सुबह और शाम पन्द्रह–पन्द्रह मिनट के लिए इस प्रकार ग्यारह दिनों तक रेकी दिजिये।

6. शिशु प्रतारण –

कभी–कभी बचपन में ही किसी को काफी कष्ट झेलना पड़ता है। घर परिवार में उसकी बेकदरी होती है। जरा जरा ही बात पर डाँट या मार पड़ती है, सुख–सुविधा से वंचित उस शिशु में हीन भावना पनपने लगती है । घर की परिस्थिति के कारण बचपन में नौकरी कर रहा है। किसी घर, होटल या कारखाने में जहाँ उसे न तो समय पर खाने को मिलता है और न कोई सुविधा, ऊपर से जरा जरा बात बात में मार भी पड़ती है। इन सब कारणों से शिशु अवस्था में ही उसने हीन भावना पैदा होती है वह उसकी मानसिक प्रगति में बाधक बन जाती है और जैसे–जैसे वह बड़ा होता है वह हीन भाव भी बढ़ने लगता है इस अवस्था से छुटकारा दिलाने के लिए हालू प्रतीक उपयोग में लाया जाता है। अपने आज्ञा चक्र में उस शिशु या व्यक्ति को सफेद चमकीले प्रकाश में ढका हुआ देखिए कि अब बहुत प्रसन्न चित्त है और उसकी हीन भावना समाप्त हो गई है और तब जोनर के बाद हालू और शान्ति सिंबल बनाइए, सुबह शाम पन्द्रह पन्द्रह मिनट ग्यारह से इक्कीस दिनों तक।

7. क्रिस्टल कार्यक्रम –

किसी व्यक्ति की समस्या के समाधान के लिए ''प्रोग्रामिंग'' करके उसे कोई ऐसी माला पहना सकते हैं जो रेकी सोख सके और धीरे–धीरे उस व्यक्ति को रेकी प्राप्त होती रहे जिसने उसे पहन रखा है। इस कार्य के लिये स्फटिक या रूद्राक्ष की माला कारगर पाई गई है। जिस माला का उपयोग करना है उसे नमक के पानी में चौबीस से अड़तालिस घण्टे तक रखिए, नमक बहुत कम हो करीब एक चुटकी अन्यथा माला की डोरी गल जायेगी। इसके बाद माला को नमक के पानी से निकाल कर साफ पानी से धो लें और साफ कपड़े में दबा–दबा कर सुखा लें। अब माला प्रोग्रामिंग के लिये तैयार है। माला को अपनी बांयी हथेली में लेकर दाहिनी हथेली से उसे ढक लें, जिस व्यक्ति के लिए माला तैयार करना है उनका नाम, उम्र निवासी जहाँ के हों मन ही मन बोलते हुये उनकी समस्या क्या है? रोगव्याधि, कोई ऊपरी छाया, टोना–टोटके से मुक्ति दिलाना है जो भी समस्या है उसे अपने आज्ञा चक्र में लाईये कि वह व्यक्ति सफेद चमकीले प्रकाश में ढके हुये है और उनकी समस्या समाप्त हो गई है वे बहुत प्रसन्नचित्त और आनन्दमग्न हैं, और अब उस समस्या से संबंधित सिंबल जोनर के बाद बनाईये। इस प्रकार उस माला को करीब पचास मिनट तक रेकी दें और हर दस मिनट के बाद प्रोग्रामिंग के लिए कही गई बातों को दोहरा लीजिये कारण बीच बीच में ध्यान भटक सकता है । अगर एक बैठक में पचास मिनट न हो सकें तो बीच में ही माला को साफ कपड़े में लपेट कर ऐसे स्थान पर रखिये कि

कोई उसे छू न सके और दूसरे बार में रेकी पूरी कर लें और जिस व्यक्ति के लिए माला बनायी है उसे पहना दें । इस पद्धति सं प्रोग्रामिंग करके आप माला किसी भी व्यक्ति को दूसरे स्थान पर भी भेज सकते हैं, परन्तु माला का पैकिंग ठीक से कर दें। अगर आवश्यक हो तो दो से तीन माह के अन्तर में पुनः प्रोग्रामिंग कर दें।

किसी –किसी व्यक्ति में नकारात्मक भाव इस कदर कूटकूट कर भरे रहते हैं कि उसका आत्म विश्वास समाप्त होने लगता है । आत्म विश्वास की कमी के कारण वह कहीं अकेले नहीं जाना चाहता है , साथ में कोई रहे, कार या स्कूटर नहीं चला सकता है, कोई कार्य वह कर सकता है इसका विश्वास उसे नहीं रहता है। कहेगा भाई मुझसे यह काम नहीं हो सकता है और दूसरों के प्रति भी यही मनोभाव उजागर होने लगता है, किसी दूसरे के प्रति भी वह कह सकता है, अरे वह बेकार का आदमी है, उससे कुछ भी नहीं हो सकता है। आत्म विश्वास में कमी के कारण व्यक्ति किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकता है मान लीजिये किसी व्यक्ति को अकेले स्टेशन जाना हो, घर से निकलने पर उसे यह भय सतायेगा कि कहीं किसी सवारी गाड़ी के नीचे ना आ जाये, रास्ता कैसे पार करें, यही रास्ता स्टेशन जाता है या दूसरा, जिस सवारी पर बैठकर जा रहें है कहीं उस उलट ना जाय, किसी वाहन से टकरा ना जाये और इन सब मनोभाव के कारण वह शायद ही स्टेशन पहुँच सके। ऐसे व्यक्ति को बताई गई विधि के साथ जोनर, हालू एवं रामा शान्ति सिंबल से रेकी दें।

8. नकारात्मक मनोवृत्ति –

किसी किसी व्यक्ति में नकारात्मक मनोभाव इस कदर बढ़ जाता है कि वह हर बात का अँधेरा पहलू ही सोचता है। अगर कोई महिला किसी पुरूष से हँस–हँस कर बात कर रही है तो अवश्य दोनों के बीच में कोई सम्बन्ध है। अगर रात्रि के मध्य में कोई टेलीफोन घनघना रहा है तो ओह, चाची बीमार चल रही थी, लुड़क न गई हो, अगर परिवार का कोई युवा सदस्य कोई नया काम करना चाहे या कोई प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाहे तो उसका आत्मबल बढ़ाने के बदले कहेंगे, अरे वह बेकार प्रयास कर रहा है, यह काम उससे हो ही नहीं सकता । हर बात में सिक्के का पृष्ठ भाग (अन्धकार) देखेंगे यह अत्यन्त प्रतिकूल मनोवृत्ति है और व्यक्ति के आगे बढ़ने में बाधक बनती है। ऐसे व्यक्ति को बतायी गई विधि से आज्ञा चक्र में सकारात्मक शुभ विचारों के साथ जोनर के बाद हालू और ई आह वाह सिंबल दें जो वास्तवितकता का ज्ञान करायेगा। बीच बीच में उसके स्थान पर हर्थ या रामा भी दे सकते हैं।

9.भय एवं खराब स्वप्न –

किसी किसी बच्चे या व्यक्ति को भय की मात्रा अधिक होती है, पंखे के नीचे लेटा है तो भय है कि कहीं पंखा मेरे ऊपर न गिर जाये। कार या ट्रेन में चल रहें हैं तो कहीं एक्सीडेन्ट ना हो जाये, बिजली का स्विच छूने में भय लगता है कि कहीं करन्ट ना मार दे। भय की मनोदशा बनी रहती है रात्रि में बुरे बुरे डरावने स्वप्न आते हैं भय से कभी कभी नींद भी खुल जाती है। डरावने बुरे सपने का क्या अर्थ निकलता है इसकी जानकारी ज्ञानियों से लेना चाहता है इसके कारण भी मनोदशा खराब रहती है। प्रसन्नता गायब होने लगती है तरह तरह के अन्देशे बने रहते हैं इस समस्या के निदान के लिए शान्ति सिंबल अत्यन्त लाभकारी बताई है। बताई गयी विधि बाद, अर्थात अपने आज्ञा चक्र में उस व्यक्ति को सफेद चमकीले प्रकाश में ढका हुआ देखें कि उन्हें किसी बात से डर नहीं लग रहा है कोई भी खराब स्वप्न नहीं दिख रहा है सभी से बहुत प्यार कर रहे हैं तब जोनर हर्थ एवं शान्ति सिंबल लगायें।

10. भौतिक लाभ –

करूणा रेकी में किसी भी प्रकार के भौतिक लाभ के लिए क्रिया सिंबल का प्रयोग किया जाता है और परिस्थिति के अनुसार उसके संयोग के लिए भी सिंबल लगते हैं। किसी प्रकार का भौतिक कार्य हो, नौकरी में कोई कठिनाई आ गई हो, उन्नति रूक गई हो, घर, जमीन की खरीद बिक्री में कठिनाई आ रही है, साक्षात्कार के लिए कहीं जाना है , पुत्री का विवाह करना है, पुत्र को कोई काम करना है, संतान का कोई भी भौतिक कार्य हो उसके लिय सिंबल का प्रयोग करते हैं संतान की प्राप्ति नहीं हो रही है, घर में टी0वी0, फ्रीज की आवश्यकता है जो भी कार्य हो उसके सकारात्मक परिणाम पर पहुँचें और तब आप अपने प्रकाश युक्त आज्ञा चक्र में देख रहे हैं कि पुत्री के लिए कई रिश्ते की जानकारी मिल रही है और उसमें से उपयुक्त वर के साथ पुत्री का रिश्ता तय हो गया है और उसकी सगाई (इंगेजमेन्ट) भी हो गयी है । इस सकारात्मक परिणाम पर पहुँचने के बाद अपने आज्ञा चक्र क्रिया जोनर इसके बाद ई–आह –वाह सिंबल में अपने सकारात्मक सिंबल विचार शक्ति को शक्ति एवं वास्तविकता प्रदान करें। मान लीजिये आपको किसी दूसरे शहर में जाकर लड़के वालों से बात करनी है और चाहते हैं कि आपके साधन के अनुसार कार्य सम्पन्न हो तो आप अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र में देखिये कि आप लड़के वाले के घर पहुँचे हैं, आनन्ददायक वातावरण में सभी बातें हो रही है और आपकी बात पर उनके यहाँ सभी की सहमति हो गई है, इसके बाद आप तीनों सिंबल

अर्थात जोनर, क्रिया और ई–आह–वाह बनाकर वहाँ जाने से कुछ दिन पहले से ही रेकी देना आरंभ कर दें। किसी किसी व्यक्ति में धन की लोलुप्ता इतनी बढ़ जाती है कि उसे नैतिकता, अनैतिकता की पहचान नहीं रह जाती है कोई भी उलट सीधा कार्य कर धन कमाने का लक्ष्य रहता है। जिसके कारण कभी कभी मुसीबत में पड़ सकते हैं अच्छे बुरे का मानों ज्ञान समाप्त होने लगता है घर के कोई बुजुर्ग हैं जो अब घर पर ही आराम करते हैं बेटों ने व्यापार इत्यादि का कार्य संभाल लिया है । परन्तु हर काम में टांग अड़ाने की आदत पड़ गई है, यद्यपि उन्हें कुछ भी लेना देना नहीं है । आप पूजा पाठ में एकाग्रता में ध्यान लगाना चाहते हैं लेकिन एकाग्रता की कमी के कारण ध्यान नहीं लग पाता है । अपनी आवश्यकता के अनुसार स्थिति को अपने प्रकाश युक्त आज्ञा चक्र में देखते हुये हर्थ नौसा एवं शान्ति सिंबल बनाए, अगर किसी व्यक्ति को दूर करने की रेकी देना हो तो जोनर के बाद नोसा एवं शान्ति सिंबल लगायें नौसा एक ऐसा आध्यात्मिक सिंबल है जो व्यक्ति के ध्यान को एकाग्र कर आध्यात्मिक की ओर ले जाता है और आत्म दर्शन में सहायक होता है, अगर किसी व्यक्ति को उसके नैतिक पतन से ऊपर उठना है तो सिंबल विचार वांछित परिणाम या लक्ष्य की प्राप्ति कराता है नौसा सिंबल का उपयोग बच्चों की मनोदशा सुधारने के लिए भी करते हैं। वे सदैव नैतिकता की ओर बढ़ते हैं, दूसरों की सेवा करते हैं, अपनी एकाग्रता बनाते हैं जो उनकी शिक्षा के लिए आवश्यक है । बचपन की अवस्था से ही उन्हें अपनी अनोखी निपुणता की जानकारी प्राप्त करने के प्रति सजग रहना चाहिये इस ओर भी नौसा

सिंबल सहायक होता है अगर घर में कोई वस्तु चोरी चली गई है तो आपको शंका है कि अमुक व्यक्ति ने यह चोरी की है तो उसे भी नौसा सिंबल के साथ रेकी दते हुये यह शुभंकर विचार लायें कि उसमें अपने अन्तरमन से प्रेरणा से चोरी की वस्तु वापस कर दिया है या वहीं रख दिया है जो आपको मिल गई है।

11. वास्तविकता की पहचान –

वास्तविकता की पहचान के लिए ई–आह–वाह सिंबल का उपयोग करते हैं मान लीजिये कि आप कोई कार्य योजना बना रहे हैं या किसी कार्य योजना पर अमल कर रहें हैं और चाहते हैं कि सफलतापूर्वक आपकी वह कार्य योजना पूरी हो जाये। वह यह नहीं समझ पा रहा है कि उसकी वास्तविक जिम्मेदारी क्या है या कोई बच्चा है जो पढ़ाई से अधिक समय खेलकूद, टी0वी0 एवं अपने मनोरंजन में व्यतीत करता है उसे वास्तविकता का ज्ञान नहीं है कि पढ़ाई लिखाई नहीं करेगा तो बड़ा होकर क्या करेगा । ऐसी सभी समस्याओं के लिए जोनर के बाद रामा एवं मनोनुकुल इच्छा के अनुसार प्रकाश युक्त आज्ञा चक्र में सकारात्मक सफलतापूर्वक आपकी व योजना पूरी हो जाये या परिवार का कोई सदस्य जो स्वयं ही मस्त है उसे देखे एवं सिंबल बनाना प्रारंभ करें।

12. छात्र पथ प्रदर्शक –

छात्र–छात्राओं ने जिन्हें अपनी जिम्मेदारी महसूस नहीं है और अधिकतम समय अपने मनारेंजन, लड़ाई–झगड़े में व्यतीत करते हैं उन्हें वास्तविकता का ज्ञान करने के लिए ई–आह–वाह का प्रयोग करना चाहिए। अपने ज्योति युक्त आज्ञा चक्र में अपने पुत्र–पुत्रियों को एक स्थान पर बैठा हुआ देखिए कि वे आपस में प्यार के साथ मिलजुल कर और प्रसन्न बैठे हैं और अपनी पढ़ाई की चर्चा कर रहे हैं। सभी में आपस में इतना प्रेम और अपनापन है और सभी पढ़ाई करने बैठ गये हैं एवं सफेद प्रकाष में सभी बैठकर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं।

13. समरूपता –

अनेक व्यक्तियों में समरूपता की कमी पायी जाती है। कुछ चाहते हैं कि सभी लोग उनके मन मुताबिक काम करें और अगर कोई काम करने में मन माफिक नहीं हुआ वे तुरन्त क्षुब्ध हो जायेंगे। यह मनोवृत्ति अत्यन्त हानिकरक है और आगे चल कर मानसिक तनाव का रूप ले सकती है । व्यक्ति के मनोभाव में लचीलापन अत्यन्त आवश्यक है और व्यक्ति के अनूकुल करके चलें और जब ये मनोवृत्ति बन जायेगी तो वे जरा जरा सी बात में उलझते नहीं रहेंगे।

व्यक्ति की समरूपता, एकरूपता, लचीलेपन के लिये रामा सिंबल अत्यन्त उपयोगी पाया गया है । अपने प्रकाश युक्त आज्ञा चक्र में संबंधित व्यक्ति या व्यक्तियों को चमकीले सफेद प्रकाश में देखते हुये यह अनुमान लगायें कि वे अत्यन्त प्रसन्न, सन्तुलित एवं आनन्द की स्थिति में है सभी से प्यार से मिल और बोल रहे हैं इनका ध्यान लगाकर हर्थ, रामा और शान्ति सिंबल 15–20 मिनिट सुबह और शाम कुछ देर बनायें और दशा में परिवर्तन को देखते हुये दिन में एक बार रेकी कर दें।

14. प्यार अपनापन –

अनेक परिवारों में यह देखने में आता है कि बच्चों या बड़ों के बीच आपसी कटुता पैदा हो जाती है। बच्चों में विशेषकर यह देखने में आता है कि अपनी किसी चीज पर वे किसी को हाथ लगाने नहीं देते हैं जिसके कारण भाई–बहनों के बीच लड़ार्द–झगड़ा भी शुरू हो जाता है लेकिन उनके बीच आपसी प्यार और अपनापन रहे तो यह स्थिति नहीं आती है । परिवार के बेटे–बहुओं के बीच यह स्थिति आ सकती है और आपसी मनमुटाव हो सकती है जिसके कारण घर परिवार की शान्ति भंग होने की संभावना बढ़ सकती है और प्यार और अपनेपन की कमी से शान्ति भंग हो सकती है। प्यार और अपनेपन की कमी के कारण परिवार के सदस्यों के बीच संवादहीनता की स्थिति आ सकती है जो कभी कभी बड़ी कटुता में परिवर्तित हो जाती है। इन सभी परिस्थितियों में बताई गई विधि को अपने प्रकाश युक्त आज्ञा चक्र में बच्चों या परिवार के सदस्यों को बारी बारी से दखें कि कितने प्यार और अपनेपन से एक दूसरे से व्यवहार कर रहे हैं। जोनर लगाकर हर्थ, रामा और शान्ति सिंबल 15–20 मिनिट बनाएं और जहाँ तक हो सके इसका जिक्र किसी से न करें।

15. शान्ति शुभकामनाएँ –

अपने परिवार या रिष्ते में किसी प्रौढ़ व्यक्ति, जो उम्र के साथ बीमारी के कष्ट में है को अब अपनी ओर से शान्ति और शुभकामनाओं के लिए रेकी भेज सकते हैं, आप यही चाहते हैं कि वे प्यार और करूणा के साथ आध्यात्मिकता की ओर भी ध्यान दें और शान्तिमय जीवन यापन करे। यह पाया गया कि जो व्यक्ति जिस भी कार्य में व्यस्त रहा करते थे अपनी नौकरी या व्यापार में तो अत्यन्त क्रियाशील थे, पर कार्य से अवकाश प्राप्त करने के बाद उनके जीवन में एक शुन्यता सी आ गई है, कहते हैं कि खाली मन में शैतान का घर बन जाता है । ऐसे व्यक्ति हमेशा अपने भूतकाल में भ्रमण करते हैं भूतकाल में अधिक भ्रमण करने पर तनाव बढ़ता है, कारण मानस पटल पर भूतकाल की वे ही बातें उमड़ कर आती है जो अप्रिय थी जिन्हें उनके मन ने स्वीकार नहीं किया अच्छी बातें बिना याद किये नहीं आती है जबकि कटू बातें अपने आप उभरने लगती है जो उनकी अशान्ति का कारण बनने लगती है । घर परिवार में उनसे अधिक समय कोई बात करने वाला नहीं मिलता है, बेटे दिन भर अपने काम में रहते हैं, बहुएं भी अपने काम में व्यस्त रहती है । कौन हर समय बैठकर उनसे बातें करें ? उलझन और बढ़ती है। उनकी अगर बताई गई विधि से जोनर लगाकर हर्थ नोसा और शान्ति सिंबल से रेकी दी जाय तो मन में शान्ति बनी रहेगी ।

16. नई योजनायें / व्यापार में उन्नति –

कोई नया काम प्रारंभ करना है, मान लीजिये कपड़ों का व्यापार करने की इच्छा है, तो किस तरह के कपड़ों का व्यापार किया जाय? रेडीमेड कपड़े, साड़ियाँ या शुटिंग आदि । डिपार्टमेन्टल स्टोर बनाना है या कॉस्मेटिक के साथ साधारण उपयोग का सामान रखना है तरह–तरह की योजनाऐं दिमाग में आती है जो नया काम करने की सोच रहे हैं उनमें कोई जोखिम तो नहीं है ? आपके लिए कौनसा नया कार्य हितकारी रहेगा इसका मार्ग दर्शन करने के लिए ई– आह–वाह सिंबल अत्यन्त उपयोगी है। आप एक–एक करके अपनी योजनाओं पर विचार करिये और बारी बारी से अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र में देखें कि आपने अपना यह नया कार्य प्रारंभ किया है, वह बढ़ रहा है और फलफूल रहा है उसके बाद रामा, क्रिया और ई–आह–वाह सिंबल से रेकी करें, अपनी सभी योजनाओं को रेकी देने के दौरान आपको किसी योजना को प्रारंभ करने की अन्त प्रेरणा मिलेगी, उसे प्रारंभ करिये और प्रारंभ करने के बाद भी इन्ही तीनों सिंबल से रेकी देते रहिये, ई–आह–वाह सिंबल आपके उस कार्य की वास्तविकता को क्रियान्वित करने में सहायक होगा। किसी चल रहे व्यापार में उन्नति के लिए भी ये तीनों सिंबल सहायक होंगे।

17. पूर्व जन्मों के कर्म/प्रारब्ध की शान्ति –

हमारे शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति इस जन्म में जो भी कष्ट भोगता है अपने रोग व्याधि के कारण या आर्थिक पारिवारिक कष्टों के कारण जो भी है वह व्यक्ति के प्रारब्ध अर्थात पूर्व जन्मों के दोषपूर्ण कार्य के कारण है।

अनेक शास्त्रों का दृढ़ मत है कि प्रारब्ध तो भोगना होगा। ''करम गति टारे नहीं टरे'' यह युक्ति दी जाती है, जबकि पाश्चात्य देशों में भी अनेक विद्वान कर्म फल को मानते हुये यह कहते हैं कि रेकी दिव्य है और इसमें कर्म के फल को मिटाने की शक्ति है। प्रयोगों के द्वारा यह पाया गया है कि जोनर सिंबल पिछले जन्मों के कर्म फल के साथ अगर पूर्वजों को मिले श्राप के कारण पीढ़ी को कोई कष्ट है तो उसे मुक्त करता है । यहाँ जोनर का उपयोग उपचार की दृष्टि से शुभंकर विचार करते हुये करना होता है । अगर यह व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के प्रारब्ध के कारण कष्ट झेल रहा है या पूर्वजों के श्राप प्रतिफल है तो जोनर सिंबल के उपयोग से यह मुक्त हो जायेगा अगर दूर का उपचार कर रहे हैं तो दो बार जोनर बनाने की आवश्यकता नहीं है दूर स्थित व्यक्ति को अपने आज्ञा चक्र के प्रकाश में देखते हुये हालु उपचार का भी कार्य करेगा । जबकि जोनर परिस्थिति की आवश्यकतानुसार कार्य करेगा और उसके बाद नोसा या शान्ति में से कोई भी लगा सकते हैं।

18. प्रेत बाधा से मुक्ति –

करूणा रेकी में प्रेत बाधा, ऊपरी छाया, टोना–टोटका से मुक्ति के लिए दो सिंबल हैं। अगर किसी व्यक्ति के ऊपर ऐसा प्रभाव है तो उनके लिए हालु का उपयोग करते हैं, परन्तु अगर किसी घर, भूमि, दुकान, फैक्ट्री, परिसर से इनका प्रभाव मिटाना है तो रामा सिंबल का उपयोग करते हैं, अगर मात्र शंका वश इन सिंबल का उपयोग किया जाता है और प्रेत बाधा ऊपरी छाया या टोना–टोटका का कोई भी प्रभाव न रहा हो तो इन सिंबल के उपयोग का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है, साथ ही सिंबल का उपयोग करने वाले पर कतई कुप्रभाव नही पड़ता है साथ ही सिंबल का उपयोग नकारात्मक शक्ति करूणा रेकी शक्ति प्राप्त व्यक्ति का कुछ बिगाड़ नहीं सकता है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि भवन, भूमि, परिसर, फैक्ट्री को इन नकारात्मक बाधाओं से मुक्त करना है तो रामा सिंबल का उपयोग करते हैं इनके लिए प्रत्येक कमरे में लगे हुये बाथरूम में रामा सिंबल का उपयोग करना होगा कार्य प्रारंभ करने के लिए एक ''धूप'' लें, बाजार में काली मोटी धूप मिलती है उसे मिट्टी के दीपक में रखकर जला दें और जिस कमरे में सफाई करना है उस कमरे में दीपक को मध्य में रख कमरे में धुआँ फेलने दें आप कमरे से बाहर आ जायें, 5–10 मिनिट बाद उस दीपक को बाँयी हथेली में लें और अपनी बाँयी ओर समीप के कमरे का जो कोना है उसके समीप पहुँचकर अपनी दाहिनी हथेली से धूप के उठ रहे धुएँ को तीन बार

उस कोने के ऊपर रखें हथेली को पंखे के समान चलायें कि धुआँ ऊपरी भाग में पहुँच जाये। तीन बार इस प्रकार हथेली चलाकर पाँचों अंगुलियों को मिलाकर चोंच बनाकर सबसे ऊपरी भाग में रामा सिंबल बनाएं, अब तीन बार रामा–रामा–रामा कहें, इसके बाद उस कोने में मध्य भाग में इसी प्रकार करें तीन बार धूप का धुआँ फेंके, चोंचनुमा अंगुलियों से एक बार हवा में दूर से ही रामा सिंबल बनाकर उसके नाम का उच्चारण करें, अब कमरे की दीवार की ओर मुँह करके अपने बांयी ओर ध्यान रखें, बांयी ओर चलें और राह में पड़ने वाले प्रत्येक खिड़की, रोशनदान, दरवाजे, नाली अर्थात कमरे से निलकने वाले सभी स्थानों की सफाई करना है इसलिये एक–एक करके सफाई करें।

खिड़की दरवाजा जो भी बाहर खुलने वाले स्थान हैं सर्वप्रथम उसके ऊपरी भाग में वही क्रिया अपनाईये मान लीजिये सर्व प्रथम कोई खिड़की है तो उसकी चौखट पर तीन बार धूप का धुआँ फेंकें एक बार रामा सिंबल चोंचनुमा पाँचों अंगुलियों से (दाहिनी हथेली) उसके चारों ओर बनपायें और जब कमरे में दीवार के मध्य मिलाकर हवा में मध्य चौखट की ओर तीन बार उच्चारण करें अब चौखट के बांयी ओर मध्य में नीचे की ओर मध्य में दाहिनी ओर मध्य में करें । इसी प्रकार अपने बांयी ओर चलते हुये खुलने वाले स्थान हो उसके चारों ओर रामा सिंबल बनायें और जब कमरे की दीवार के मध्य में पहुँचे तो दूर से ही (दीवार के मध्य में) उधर की ओर उच्चारण करें चारों दीवार को हो जाने के बाद उस कमरे के मध्य में सभी कोने,

खिड़की, रोषनदान, दरवाजे, नाली, रामा सिंबल से शुद्ध कर दिया है अब धूप के साथ कमरे के बाहर आकर कमरे को बन्द कर दीजिये, 10–15 मिनिट बाद उस कमरे में जाइये। घर के सभी कमरों को एक एक करके इस प्रकार शुद्ध कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि नकारात्मक शक्ति की शंका इस प्रकार शुद्ध कर सकते हैं और लगेगा कमरे का वातारण बदल गया है। प्रत्येक तीन माह पर आप इस क्रिया को दोहरा सकते हैं । घर के बरामदे, आँगन और खुली छत को शुरू करने की प्रक्रिया कुछ भिन्न है उसके कोने के जरा बगल में उसकी दीवार से मिलते जुलते रंग की ओर बने हुये सिंबलपर रखकर अपने प्रकाशित आज्ञा चक्र में यह शुभंकर विचार लाते हुये कि यह सिंबल नकारात्मक शक्तियों की रक्षा करेगा, रेकी दे दें । इसी प्रकार प्रत्येक कोने में कर दें । अपने कीचन गार्डन, बगीचा, लोन को भी नकारात्मक शक्तियों से मुक्त शुद्ध कर सकते हैं। प्रत्येक के लिए पाँच छोटी प्लास्टिक या पान मसाले की ड़िबियाँ लीजिये। पाँच छोटे कागज लेकर उन पर रामा सिंबल बनाईये और तीन बार सिंबल का नाम लिखिये । पाँचों कागज को अपनी हथेलियों में रखकर करीब 10 मिनिट तक अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र में यह शुंभकर विचार लाते हुये कि यह रामा से रेकी दें, अब प्रत्येक कागज को अलग–अलग डिब्बी में बन्द करके आप लोन, बगीचे, कीचन, गार्डन के चारों कोने और एक को बीच में करीब 10 इंच मिट्टी निकाल कर गाड़ दें। तीन माह बाद आप यह प्रक्रिया दोहरा सकते हैं । अपनी किसी फैक्ट्री, उसके बाहर के स्थान, दुकान या किसी परिवार

को भी आप इसी प्रक्रिया के द्वारा शुद्ध कर सकते हैं । अगर किसी नकारात्मक शक्ति के कारण कोई अड़चन आ रही है तो अवश्य दूर होगी, वैसे भी आपको अगर शंका नहीं भी है तब भी आप इन स्थानों को रामा सिंबल से शुद्ध करके वातारण में परिवर्तन देख सकते हैं।

19. शरीर में प्रविष्ट ऊपरी छाया से मुक्ति –

अनेक पाश्चात्य रेकी विशेषज्ञों का यह मानना है कि पूर्व जन्मों मे किन्हीं व्यक्तियों के बीच खूनी दुश्मनी थी, परन्तु उनमें से कोई व्यक्ति अपना बदला न ले सका, उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा में बदला लेने की बात बनी हुई है, यह भटकती आत्मा उस व्यक्ति को खोजती है उसका कहीं पुर्नजन्म हुआ है या नहीं? यह सत्य है कि ईसाई और कुछ अन्य धर्मों में पुर्नजन्म की मान्यता नहीं है, परन्तु इन धर्मों को मानने वाले अनेक रेकी विशेषज्ञों का विश्वास है कि भटकती आत्मायें पूर्व जन्मों का बदला लेने के इरादे से आती है। जब कभी उस आत्मा को पा लेती है जिसने अब नया जन्म ले लिया है तो बदला लेने के इरादे से वह उसके शरीर में किसी रोग व्याधि के रूप में प्रवेश कर जाती है और उसे मार कर ही उसे छोड़ती है । रोगी व्यक्ति का अच्छे से अच्छा उपचार चल रहा है परन्तु कोई फायदा नहीं हो रहा है, समझ में नहीं आता है कि बात क्या है और धीरे–धीरे रोगी अपनी मृत्यु तक पहुँच जाती है।

करूणा रेकी में ऐसे रोगियों के उपचार के लिए अत्यन्त शक्तिषाली सिंबल है हालू, न कोई ताम–झाम न कोई झाड़–फूँक आवश्यकता मात्र इस बात की है कि जो व्यक्ति इस कार्य के लिए करूणा रेकी का उपचार कर रहे हैं वे किसी सफल अनुभवी, करूणा रेकी मास्टर के शिष्य हों, किसी फर्जी मास्टर के नहीं । रेकी प्रारंभ करने के पूर्व अपने दोनों हाथ साबुन से धो लें, पान–तम्बाकु खाते हों तो मुँह साफ कर लें

तथा मदिरा पीकर कभी रेकी नहीं करें। कमरे में एक अगरबत्ती जला दें। प्रक्रिया अपनाते हुये रोगी व्यक्ति के हृदय या मणीपुर चक्र पर दोनों हथेलियाँ रख दें और मन ही मन यह कहें कि अगर इस रोगी व्यक्ति (नाम) में किसी आत्मा का प्रवेश है तो आप इसे छोड़ दें, इसे छोड़ कर आप अपने स्थान पर जायें, इन्हें आपको छोड़ना ही होगा , इन्हें आप छोड़ दीजिये, आदर देते हुये आप इन बातों को अपने में दोहराईये, किसी अपशब्द का प्रयोग न करिये, कारण आप किसी मृत आत्मा से अपनी बात कह रहें हैं, अपने बैरी से नहीं। दो तीन बार इस बात को दोहरा कर आप अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र में यह शुभंकर विचार लाईए कि अगर यह रोगी व्यक्ति किसी आत्मा की चपेट में है तो वह आत्मा इसे छोड़कर चली गई है इसके बाद आप हालू सिंबल अपने अज्ञा चक्र में करीब पाँच मिनिट तक बनाएं, प्रत्येक बार सिंबल बनाकर तीन बार उसके नाम का उच्चारण करना नहीं भूलें 15 मिनिट के बाद पुनः उसी बात को आदरपूर्वक दोहरायें कि अगर आप कोई आत्मा है और इस व्यक्ति के शरीर में बदला लेने की भावना से प्रवेश कर गई है तो आप इसे छोड़ दीजिये, क्षमा कर दीजिये, तीन बार इसी बात को दोहरा कर अब पुनः 5 मिनिट तक उसी प्रकार हालू सिंबल बनाईये, 5 मिनिट के बाद पुनः ऊपर कही हुई बात को दोहराईये और अब यह जोड़ दीजिये आपको छोड़कर जाना ही होगा, मैं आपको इनके शरीर में नहीं रहने दूंगा/दूंगी, आप अपने स्थान पर चल जाईये, आपको कोई कष्ट नहीं होगा, इस रोगी के शरीर को आपसे मुक्ति दिलाने की पूरी शक्ति मुझ में है, आप इसे मुक्त कर दीजिये, अब पुनः

पाँच मिनिट वही हालू सिंबल बनायें। कुल मिलाकर आपने 15–17 मिनिट तक रोगी व्यक्ति को रेकी दें, इसी प्रकार पाँच दिनों तक उपचार करिये। अगर रोग के रूप में कोई आत्मा है तो वह रोगी व्यक्ति के शरीर से जायेगी और पुनः आ सकती है, करीब तीन दिनों तक, जैसे ही वह हटेगी, रोगी शरीर अधिक चैतन्य और प्रसन्न दिखेंगे। तीन दिनों से अधिक वह आत्मा रोगी के शरीर में नहीं रह सकेगी, परन्तु आप 5 दिनों तक लगातार हालू सिंबल से रेकी दे दें। रेकी प्रारंभ करने के पूर्व कृतज्ञता प्रकट (धन्यवाद) करना, अपने और रोगी व्यक्ति को चमकीले सफेद प्रकाश से ढ़कना नहीं भूलें और रेकी करने के बाद दोनों हाथों को साबुन से धो लें।

20. सेक्स प्रतारण –

यदा–कदा जानकारी मिलती है कि किसी बालक या बालिका के साथ अमुक व्यक्ति ने जबरदस्ती सेक्स किया है, परन्तु अधिकतम मामलों में इसकी जानकारी नहीं मिलती है, कुछ तो उस व्यक्ति के भय से जिसने ऐसा कुकर्म किया और कुछ लज्जावश । ऐसा उन घरों में होता है जहाँ छोटी उम्र के बालक–बालिका अपने परिवार की गरीबी के कारण दूसरों के घरों में नौकरी करते हैं। ऐसा नहीं कि यह कुकर्म मात्र गरीब बाल मजदूरों के साथ ही हो सकता है, अच्छे घरों में भी होता है/हो सकता है।

स्वयं के साथ घटित कुत्सित घटना साधारणतः कोई भी भूला नहीं पाता और ऐसे व्यक्ति मनोकुंठाग्रस्त हो जाते हैं। वे लगातार यह सोचते हैं कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? और धीरे धीरे यह हीन भावना उनके मानसिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है और बड़े होने पर भी इस हीन भावना का प्रभाव बना रहता है । ऐसे लोगों की हीन भावना से और सेक्स प्रतारण के प्रभाव से मुक्ति के लिए हालू सिंबल का उपयोग करते हैं। हालू के साथ उनके मन में प्यार एवं शान्ति उत्पन्न करने के लिए हर्थ एवं शान्ति प्रतीकों को भी लगाते हैं और अगर दूर का उपचार हुआ तो जोनर प्रारंभ में लगाते हैं।

21. रिश्तों में सुधार –

आपसी रिश्तों में मनमुटाव एक आम आत है । घर परिवार हो या रिश्तेदारी आपसी रिषतें को बिगड़ने में समय नहीं लगता है, कोई भी बात हो छोटी या बड़ी, अगर उससे मन को तकलीफ हुई तो आपसी रिश्तों पर कुप्रभाव पड़ सकता है । परिवार के समझदार लोग इस स्थिति को देखकर दुखी होते हैं और चाहते हैं कि किसी तरह मनमुटाव दूर हो आपसी रिश्ते में सुधार हो परन्तु कोई भी पक्ष शायद ही झुकने को तैयार हो आपसी बोल–चाल बन्द हो जाती है या मात्र दिखाव रह जाता है और संवादहीनता की स्थिति बन जाती है या मात्र दिखावा रह जाता है । करूणा रेकी में आपसी रिष्तों में सुधार के लिए हर्थ सिंबल अत्यन्त शक्तिशाली पाया गया है। हर्थ के साथ नोसा का उपयोग करते हैं (जो व्यक्ति के मनोभाव को उच्च ज्ञान प्रदान करता है कि आपसी कटुता से कोई लाभ किसी को नहीं मिलता) उसके बाद शान्ति सिंबल को लगाते हैं। अगर दूर का उपचार करना हो तो सर्वप्रथम जोनर सिंबल लगाते हैं । परिवार के या रिष्तेदारी के सदस्यों जिनमें आपसी रिष्ते में सुधार की आवश्यकता है तो बड़ी सफलता पूर्वक उक्त तीन सिंबल लगाकर रेकी दी जाती है । अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र मूं बारी–बारी से सभी पक्षों के सदस्यों को देखें, अब यह देखें कि वे लोग आपस में प्रेम, प्यार से मिल कर बातें कर रहे हैं सभी चमकदार सफेद प्रकाश से ढके हुये हैं इसके पश्चात जोनर, हर्थ, नोसा एवं शान्ति सिंबल विधिवत लगातार 15–20 मिनिट

सुबह और शाम रेकी दें कुछ ही दिनों में रेकी का प्रभाव दिखलाई पड़ने लगेगा।

22. मानसिक शान्ति –

मानसिक असंतुलन के कारण मानसिक अशान्ति अधिक बढ़ती है। कोई भी उलझन परेशानी या प्रतिकूल परिस्थिति जिसे व्यक्ति मानसिक रूप से स्वीकार करने को तैयार नहीं है इसे बढ़ाता है। अगर व्यक्ति ने मन में किसी व्यक्ति, घटना, परिस्थिति को स्वीकार नहीं किया तो बार बार वह व्यक्ति या घटना मानस पटल पर न चाहते हुये भी उभरने लगेगी। मानसिक अशान्ति या तनाव का प्रतिकूल प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर पड़ेगा। नींद की गोली लेकर रात्रि में निद्रा आती है, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग को निमंत्रण मिलता है।

ऐसी परिस्थिति में अगर व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन बन सके, वह परिस्थिति को स्वीकार करते हुये उससे समझौता कर सके तो यह मानसिक अशान्ति दूर हो सकती है। इसके लिये रामा सिंबल के साथ नोसा एवं शान्ति सिंबल अत्यधिक उपयोगी पाया गया है। रेकी प्रारंभ करने के पूर्व विधिवत उस व्यक्ति को अपने प्रकाशयुक्त आज्ञा चक्र में देखिए कि संबंधित व्यक्ति बहुत षान्त, सन्तुलित और प्रसन्न चित्त है और उसके बाद जोनर लगाकर रामा, नोसा और शान्ति सिंबल लगाईये 15 मिनिट सुबह–षाम।

23. आत्मा—परमात्मा —

स्वंय अपने को आध्यात्म से जोड़ने के लिए आध्यात्मिक सिंबल अत्यन्त सहायक है। व्यक्ति जन अपने मन को एकाग्र कर उसे अपनी अन्तरआत्मा से जोड़ने का प्रयास करते हैं तो व्यक्ति आध्यात्म की ओर बढ़ने लगता है। पूजा—पाठ, मूर्ति—पूजन, मंत्रोच्चारण इत्यादि जितनी भी क्रियाऐं हैं वे मन को शान्त एवं एकाग्र करने के लिए है, परन्तु मन को शान्त एवं एकाग्र करना उतना आसान नहीं है । व्यक्ति का मन उसकी इन्द्रियों के वश में हो जाता है। एक दृष्टान्त लेते हैं— एक रथ है जिसे पाँच घोड़े खींच रहे हैं, रथ व्यक्ति का शरीर है, पाँच घोड़े उसकी इन्द्रियाऐं है— आँख—नाक, कान, जीभ और त्वचा। व्यक्ति की इच्छायें हैं कि पाँचों घोड़े लगाम से बन्धे है यह लगाम व्यक्ति का मन है , लगाम सारथी के हाथों में है सारथी व्यक्ति की बुद्धि है, रथ पर जो सवार है वह है राजा अर्थात व्यक्ति की आत्मा। जब व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के द्वारा सुख की अनुभूति करता है तो घोड़े रूपी उसकी इच्छायें, कामनायें, वासना, आकांक्षा, लोलुपता आदि ओत—प्रोत होकर इधर—उधर भागती है। जब घोड़े रूपी इच्छायें इधर उधर भागती है तो मनरूपी लगाम खींचकर सारथी रूपी बुद्धि उन्हें रोकती है, परन्तु अगर बुद्धि रूपी सारथी कमजोर पड़ जाता है तो लगाम उसके हाथों से छुट कर ढ़ीली पड़ने लगती है और जैसे ही मन रूपी लगाम को ढीला छोड़ दिया तो काम—वासना, लोलुपता इत्यादि रूपी इच्छायें इधर—उधर भागने लगती है तथा व्यक्ति का मन भी उसी में रम जाता है। रथ

पर बैठी राजा रूपी आत्मा के लिए यह स्थिति कष्टदायी होती है और बारम्बार व्यक्ति की अन्तरआत्मा से आवाज आती है कि उसका यह कार्य या आचरण उचित नहीं है और जब बुद्धि रूपी सारथी आत्मा रूपी राजा की बात को अनसुनी करने लगता है तो आत्मा रूपी राजा निढाल हो जाता है और धीरे–धीरे अन्तरआत्मा की आवाज कमजोर पड़ने लगती है । व्यक्ति का मन पूरी तरह जब इच्छाओं के वशीभूत होकर उनके पीछे दौड़ने लगता है तो इच्छायें उसे और अधिक दौड़ाती है क्यों कि वे कभी सन्तुष्ट नहीं होती है।

धीरे–धीरे इधर भागना मन की आदत बन जाती है और इसी भाग दौड़ से मन अशान्त हो उठता है । अतएवं मन को शान्त करने के लिए पहले बुद्धि रूपी सारथी को शक्तिशाली बनाना होगा और जब सारथी मन रूपी लगाम को कसने लगेगा तो इच्छा रूपी घोड़े अपने आप नियंत्रण में आ जायेंगे। विषय वासना में लिप्त यह मन तरह–तरह की कामनाओं के बोझ से दबा रहता है और जब उनसे मुक्त होता है तब अपने सही स्वरूप आत्म तत्व में लीन हो जाता है।

स्थूल शरीर के चारों ओर मायाजाल का तानाबाना तथा विषय वासना का ढ़कना व्यक्ति के चारों ओर इतना कसता रहता है कि वह जीवात्मा की आत्मा को भूलकर मात्र जीव रह जाता है और नाना प्रकार के कष्ट भोगते हुये अपनी मृत्यु से भयभीत रहता है, जीवन पर्यन्त वह अपनी आत्मा से साक्षात्कार नहीं कर पाता है कारण मन वैराग्य नहीं विषय वासना में रमा रहना चाहता है।

बिना वैराग्य के गृहस्थ आश्रम में रहते हुये सांसारिक बन्धनों से विरक्ति के लिए आध्यात्मिक सिंबल अत्यन्त उपयोगी है । यह धीरे–धीरे मन को विषय वासना के माया जाल से अलग करके अन्तरआत्मा के ज्ञान चक्षु को खोलता है जिससे संसार की वास्तविकता सत्य एवं असत्य की पहचान हो सके । धीरे–धीरे ऐसा लगेगा कि व्यक्ति अपनी निंद्रावस्था से निकल कर जाग्रतावस्था में पहुँच गया है। कामना,इच्छा, विषय–वासना के प्रति उसका मोह भंग होने लगेगा और वह अपने अन्तःकरण में झाँक कर अपने मन को अपनी आत्मा में एकाकार करने लगेगा। मन को मारना नहीं है बल्कि उसको संसार की वास्तविकता का ज्ञान कराना है और जैसे ही यह आत्म ज्ञान प्राप्त होता है व्यक्ति परमात्मा में लीन होने लगता है । धीरे–धीरे ध्यानावस्था की अवधि बढ़ने लगती है और सिद्ध होने पर समाधि की अवस्था में पहुँचने लगता है।

आध्यात्म के इस सिंबल का उपयोग अत्यन्त आसान है। एकान्त में कहीं बैठकर अपनी काल्पनिक दृष्टि से यह देखें कि आप विषय, वासना, कामना और मायाजाल के ताने बाने से अलग हो गये हैं और अपने अन्तःकरण में में देख रहें हैं एक चमचमाता सफेद प्रकाश आपके चारों ओर फैला हुआ है और आप कितना प्रसन्न और आनन्दित हैं धीरे–धीरे आपका यह आनन्द बढ़ता जायेगा और आप ध्यानावस्था में पहुँचने लगेंगे।

रेकी गाइड

करूणा रेकी एक देवी शक्ति है और एक विशेष पद्धति से करूणा रेकी की शक्ति दिये जाने पर उस व्यक्ति के पास उसके रेकी गाईड आ जाते हैं। व्यक्ति के पिछले जन्मों में उनके साथ तो उच्च आध्यात्मिक लोग थे और जिनका पुर्नजन्म नहीं हुआ है, उनकी आत्मायें मानवता की सेवा में तत्पर रहना चाहती है और वे ऐसे माध्यम खोजती है जिनके द्वारा वे मानवता की सेवा कर सकें । करूणा रेकी की शक्ति प्राप्त करने के साथ ही ये पुण्य आत्माऐं उस व्यक्ति के रेकी गाइड के रूप में आ जाती है । ये रेकी गाइड एक या एक से अधिक हो सकते हैं । रेकी प्रारंभ करने से पूर्व अपने गाइड को याद करने और उनसे आग्रह करने पर मार्ग दर्शक के रूप में सहायता के लिए वे आ जाते हैं। रेकी एक सकारात्मक ऊर्जा है जिसका उपयोग सदैव ऐसे कार्यों के लिए करना चाहिये जिससे किसी की हानि न हो और ऐसी ही सकारात्मक कार्यों में रेकी गाइड की मदद मांगने पर प्राप्त होती है।

रेकी गाइड से परिचय

किसी कमरे में भूमि पर अपने लेटने के लिए कुछ बिछा लिया जाए। कमरे में एक अगरबत्ती जला लें और कमरे को बन्द कर लें। 10–15 मिनिट के लिये आपको कोई परेशान ना करे या बाधा ना डाले और वातावरण शान्त रहे । अब दीवार के सहारे बैठकर अपने पैर और हाथ को फैला दें। दोनों हाथ आपके पैरों के समानान्तर रखें, अपनी आँखें बन्द करके पाँच गहरी लम्बी श्वास लीजिये जो आपके स्वाधिष्ठान चक्र से ऊपर उठकर सहस्त्रार तक जा रही है और वापस पुनः स्वाधिष्ठान चक्र में विलीन हो रही है । पाँच श्वासों के बाद आप अपने में शिथिलता का अनुभव करेंगे। आँखें बन्द रहे अब अपनी काल्पनिक दृष्टि से अपने बांए पैर के अंगुठे अँगुलियों , पंजे, ऐडी, घुटना और जांघ पूरे बांये पैर को देखिये, इसी प्रकार बारी बारी से दाहिने पैर और सभी अंगों को पैरे से सिर तक अपनी काल्पनिक दृष्टि से देखिये, अब आपका पूरा शरीर पूरी तरह से शिथिल हो गया है अब आप बिछौने पर लेट जाईये । आपके दोनों घुटने ऊपर की ओर उठे रहें और पैरों के तलुवे भूमि की ओर रहें। आपकी दोनों खुली हथेलियाँ भी भूमि की ओर रहे आपकी आँखें बन्द है अब आप मन ही मन कहिये कि मेरे रेकी गाइड आप कृपया पधारिये और अपने आगमन की जानकारी कृपा पूर्वक दीजिये । मन ही मन इन्हीं वाक्यों को दोहराते जाईये, एकाएक लगेगा कि आपके कानों में मघुर घण्टी की आवाज आ रही है या कोई नई खुषबु आपको लग रही है या ऐसा लगता है कि

कोई आपके पास आ रही है या कोई नई खुशबु आपको लग रही है या कोई आपके पास आकर खड़े हो गये हैं आप भयभीत ना हो वे आपके रेकी गाईड हैं, इस क्रिया में एक से पाँच दिन तक का समय लग सकता है आपके रेकी गाईड इस बात की तसल्ली करना चाहते हैं कि आप भयभीत तो नहीं हो रहे हैं।

अब आपको यह भान हो जाए कि आपके निमंत्रण पर आपके रेकी गाइड आपके पास आ गये हैं तो अगर आप चाहें तो परिचय आगे बढ़ा सकते हैं । अब यह कहिये कि मेरे रेकी गाइड, अगर आप एक से अधिक हैं तो एक एक करके मुझे अपना परिचय दीजिये। अपने शान्त मन में आप उनका नाम लीजिये वह नाम हर्षवर्धन है तो आप मन ही मन पूछिये कि मेरे रेकी गाइड क्या आप हर्षवर्धन हैं एकाएक पुनः वही सुगन्ध या मधुर ध्वनि आती है तो आपको उनकी स्वीकृति मिल जाती है और इस प्रकार आप अपने रेकी गाइड से अपना मेलजोल बढ़ा सकते हैं। यह ध्यान रखना होगा कि रेकी गाइड आपके निजी कार्यों के लिए नहीं है कि इधर काम धन्धा कुछ मन्दा चल रहा है गाइड जी कुछ मदद करिये, हाँ इसके लिए आप विधिवत रेकी करते समय उनकी मदद मांगिये परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में जैसे भोजन कर रहें हैं या कुछ सह कर्मियों के साथ बैठकर आवश्यक कार्य कर रहें हैं और उस समय टेलीफोन से समाचार मिलता है कि अमुक व्यक्ति की हालत बहुत नाजुक है । तत्काल आप उन्हें रेकी नहीं भेज सकते हैं अपनी आँखें कुछ क्षण के लिए बन्द करिये और अपने रेकी गाइड से प्रार्थना करिये कि कृपया आप अमुक व्यक्ति की सहायता करिये और

जैसे ही आपको इन्टेन्शन बनेगा वैसे ही अमुक व्यक्ति को आराम मिलना प्रारंभ हो जायेगा और संभव है कुछ मिनिटों में पुनः आपको टेलीफोन पर सूचना मिले कि अब अमुक व्यक्ति की हालत में सुधार है और आपको वे धन्यवाद दे रहें हैं, परन्तु यह धन्यवाद रेकी गाइड के लिए हैं ।

रेकी बॉक्स

रेकी बॉक्स

अपनी इच्छाओं एंव कामनाओं की पूर्ति के लिए रेकी बॉक्स का उपयोग करते हैं । यदि किसी प्रकार की इच्छा पूर्ति चाहते हों पुत्री का विवाह, पुत्र की नौकरी, अपने व्यापार में उन्नति, मकान, स्कूटर, कार व मशीनरी खरीदने या बेचने के लिए अपनी दुकान,मकान या जमीन पर वापस कब्जा प्राप्त करने के लिए, किसी के यहाँ अपनी धन राशि जो फँस गई है उसके वापसी के लिए, विदेश यात्रा या देश में धार्मिक स्थानों की यात्रा के लिए, संतान प्राप्ति के लिए, घर के सदस्यों से मधुर संबंध स्थापित हो सके ताकि शान्ति और आनन्द का वातावरण बन सके, बिगड़े हुए संबंधों को सुधारने के लिए, खराब आदत या व्यवसाय को सुधारने के लिए, चिन्ता फिक्र से मुक्ति के लिए, क्रोध एवं गुस्से की शान्ति के लिए, रोग से मुक्ति पाने के लिए, मन में पैदा होने वालू नकारात्मक विचारों से छुटकारा पाने के लिए आदि–आदि किसी भी इरादे के लिये रेकी बॉक्स का इस्तेमाल कर सकते हैं।

रेकी बॉक्स के लिए प्लास्टिक की छोटी कोई डिबिया लीजिए जो आपके दोनों हथेलियों में आ जाए। इस डिबिया को खोलकर नमक के पानी में 24 से 48 घण्टे तक डुबो कर रखिए जिससे उसकी नकारात्मक शक्तियाँ समाप्त हो जाएं, उसके बाद उसे साफ पानी से धो कर सुखा लें,। अब एक छोटे से कागज पर अपने इरादे या इच्छा को लिखिए। आप जो भी इच्छा कागज पर लिख रहे हैं वह सकारात्मक

शुंभकर विचार के रूप में होनी चाहिये, जैसे मेरी पुत्री का विवाह दिनांक 8 अगस्त 2014 तक हो गया है, पुत्र की नौकरी दिनांक 8 सितम्बर 2014 तक लग गई है । इस कागज के नीचे अपना हस्ताक्षर कर दीजिए। कागज को अब उलट कर उसके पीछे कार्य से संबंधित सिंबल बनाईये जैसे रोग से मुक्ति के लिए– जोनर, हालू और शान्ति किसी भौतिक कार्य के लिए जोनर क्रिया ई–आह–वाह। अब इस कागज को मोड़कर इस प्रकार रखिये कि कागज उस डिबिया में आ जाए जिसे आपने शुद्ध कर दिया है। अब आपका रेकी बॉक्स बन गया है । यह ध्यान रखिये कि कार्य पूरा करने के लिए कोई समुचित समय देकर तिथि अंकित की जाए तथा कागज पर सिंबल का चित्र बनाना है। 15–20 मिनिट का दो बार समय निकालिये। रेकी प्रारंभ के लिए वही विधि अपनाईये जो रेकी उपचार या किसी रेकी कार्य के लिए अपने हाथों को जोड़कर कृतज्ञता देना। अपने चारों ओर तक चयन किये गये रेकी सिंबल बनायें और तीन बार उनका नाम लेकर अगले सिंबल बनाइए। यह क्रम पूरे समय तक चलता रहे । अधिकतम उम्मीद रहती है कि निर्धारित तिथि तक कार्य पूरा हो जायेगा और जब कार्य पूरा हो जाए तो डिबिया को खोलकर कागज को निकाल लीजिए और उसे किसी कुएँ/नदी में डाल दीजिए, अगर यह संभव नहीं हो तो उस कागज को जला दीजिए। अगर निर्धारित तिथि तक कार्य पूरा न हुआ हो तो पुनः विचार करके कि जिस कार्य की आपने इच्छा लिखी है क्या वह आपके हित में है, क्या वह उचित है, क्या यह उचित है? अगर है

तो पुनः नया कागज लेकर नई तिथि अंकित कर पुनः रेकी प्रारंभ करें एवं पहले वाला कागज उसी विधि से नष्ट कर दीजिए।

रेकी ''विश्वास उपचार'' नहीं है अगर विश्वास नहीं भी किया जाए तो भी रेकी असरदायक होगी, कारण यह तो दिव्य सूक्ष्म ऊर्जा है, धीरे–धीरे विश्वास अपने आप आने लगता है, परन्तु अगर किसी व्यक्ति को घृणा हो तो विपरीत शक्तियाँ उनके अन्दर भरने लगती है और रोगी व्यक्ति में ऐसे ब्लॉकेज (बाधा) उत्पन्न होने लगती है उसे पार करने में इस ऊर्जा की सूक्ष्म तरंगों को अधिक समय लगता है अतएवं करूणा रेकी के प्रति विष्वास नहीं है तो बकवास न कहकर कम से कम आजमाना चाहिए।

——————

करुणा मानवता का सर्वोच्च गुण है।

निस्वार्थ प्रेम ही सच्चा प्रेम है।

सत्य एक ही है।

सच्चा ज्ञान कभी भी उलझाता नहीं है।

जो अनुभव का विषय है उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। ईश्वर और प्रेम के साथ भी ऐसा है जिसे इसका अनुभव हुआ है वही उसे समझ सकता है इसे समझाया नहीं जा सकता इसी तरह रेकी एवं करुणा रेकी को भी सिर्फ अनुभव किया जा सकता है यह बुद्धि का विषय नहीं है। यह दिल में आती है दिमाग में नहीं।

करूणा रेकी और जीवन की समस्याऐं

(1) बुरी लत से छुटकारा –

अनेक परिवार, समाज की व्यक्तियों की बुरी आदतों से कष्ट उठाते हैं। उन लोगों की उन आदतों को छुड़ाने के लिए उन्हें इन सिंबल के साथ करूणा रेकी दें।

हार्थ – शान्ति

(2) चक्रों के सन्तुलन के लिए

रामा– शान्ति

(3) शिशु प्रतारण के लिए –

जोनर– हालू – शान्ति

(4) क्रिस्टल प्रोग्रामिंग –

हालू– रामा – शान्ति

(5) आत्मविश्वास की कमी –

हालू – रामा – शान्ति

(6) गहन उपचार –

हालू– हर्थ – शान्ति

(7) नकारात्मक सोच प्रवृत्ति –

हालू– हर्थ – रामा

(8) भय व खराब स्वप्न –

हर्थ – शान्ति

(9) भौतिक लाभ –

क्रिया– ईवा– शान्ति

(10) आध्यात्मिक मनोवृत्ति –

हर्थ – नोसा – शान्ति

(11) वास्तविकता की पहचान –

रामा –क्रिया– ईवा

(12) छात्र पथ प्रदर्शक –

हर्थ – रामा– ईवा

(13) समरूपता (हारमोनी)–

हर्थ – रामा– शान्ति

(14) प्यार अपनापन –

हर्थ – रामा – नोसा

(15) शान्ति शुभकामनाऐं –

हर्थ – नोसा – शान्ति

(16) नई योजनाऐं – व्यापार में उन्नति –

जोनर– हालू– शान्ति

(17) पूर्व जन्मों के कर्म, प्रारब्द्ध की शान्ति –

जोनर– हालू – शान्ति

(18) प्रेत बाधा से मुक्ति –

हालू– रामा – शान्ति

(19) सेक्स प्रतारण –

हालू– हर्थ – शान्ति

(20) चैतन्यता / सजगता –

रामा– ईवा

(21) रिश्तों में सुधार –

हर्थ – रामा– नोसा

(22) बुरी नजर / छाया मुक्ति –

हालू– रामा – नोसा

(23) मानसिक शान्ति –

रामा– नोसा – शान्ति

(24) रूके हुये कार्य को आगे बढ़ाना –

क्रिया– शान्ति– होसाना

(25) दूर का उपचार – अनुपस्थिति उपचार –

जोनर– हालू– हर्थ – शान्ति

(26) आत्म ज्ञान –

हर्थ – नोसा – आध्यात्म

(27) किसी भी स्थान से नकारात्मक ऊर्जा हटाकर उसे सकारात्मक ऊर्जा से भरना –

जोनर– रामा– शान्ति

रेकी के सिद्धान्त

- मैं आप के दिन कुदरत का आभार मानूंगा ।
- मैं आज के दिन क्रोध नहीं करूँगा ।
- मैं आज के दिन चिन्ता नहीं करूँगा।
- मैं आज के दिन जीव मात्र से प्रेम करूँगा ।
- मैं आज के दिन अपना काम ईमानदारी से करूँगा।

करुणा रेकी के सिंबल उपयोग षीघ्र मार्ग दर्षिका

क्र. सं.	रोग /कार्य	जोनर	हालू	हर्थ	रामा	नोसा	क्रिया	ईवा	षांति	होसाना	ऊँ
1.	बुरी लत से छुटकारा			हर्थ					षांति		
2.	चक्रों का संतुलन				रामा				षांति		
3.	षिषु प्रतारण		हालू						षांति		
4.	क्रिस्टल प्रोग्रामिंग		हालू		रामा				षांति		
5.	आत्म विष्वास की कमी		हालू		रामा				षांति		
6.	गहन उपचार		हालू	हर्थ					षांति		
7.	नकारात्मक मनोवृत्ति		हालू	हर्थ	रामा						
8.	श्य एवं खराब स्वप्न			हर्थ					षांति		
9.	शैतिक लाभ						क्रिया	ईवा	षांति		
10.	आध्यात्मिक मनोवृत्ति			हर्थ		नेसा			षांति		
11.	वास्तविकता की पहचान				रामा		क्रिया	ईवा			
12.	छात्र पथ प्रदर्षक			हर्थ	रामा			ईवा			
13.	समरूपता			हर्थ	रामा				षांति		
14.	प्यार अपनापन			हर्थ	रामा	नेसा					
15.	षांति षुभ कामनाएं			हर्थ		नोसा			षांति		
16.	नई योजनाएं ,व्यापार उन्नति				रामा		क्रिया	ईवा			
17.	पूर्व जन्मों के कर्म	जोनर	हालू						षांति		
18.	प्रेत बाधा		हालू		रामा				षांति		
19.	सेक्स उत्पीड़न		हालू	हर्थ					षांति		
20.	वास्तविकता का बोध,चैतन्यता,सजगता				रामा			ईवा			
21.	रिष्तों में सुधार			हर्थ	रामा	नोसा					
22.	बुरी नजर,छाया मुक्ति		हालू		रामा	नेसा					
23.	मानसिक षांति				रामा	नोसा			षांति		ऊँ
24.	रुके हुए कार्य को आगे बढ़ाना						क्रिया		षांति	होसाना	
25.	आत्मा –परमात्मा			हर्थ		नोसा					ऊँ
26.	अनुपस्थित उपचार	जोनर	हालू	हर्थ					षांति		

जोनर

हालू

हर्थ

रामा

नोसा

क्रिया

ईवा

शांति

होसाना

ऊँ
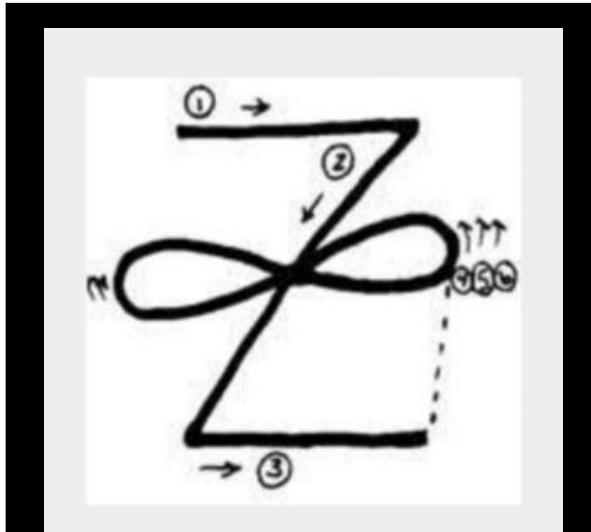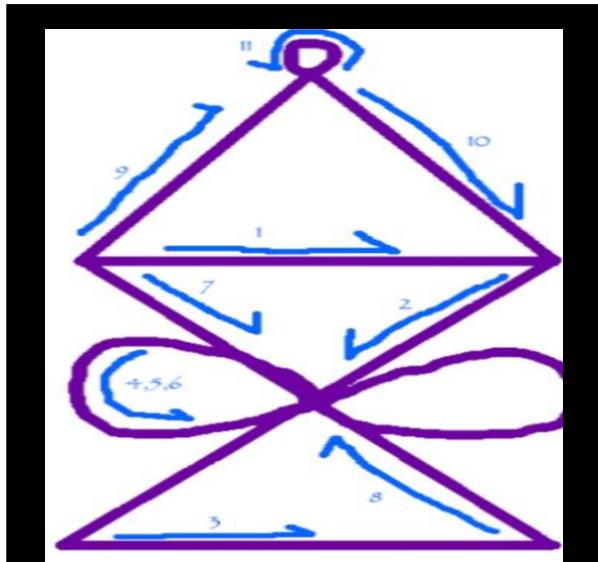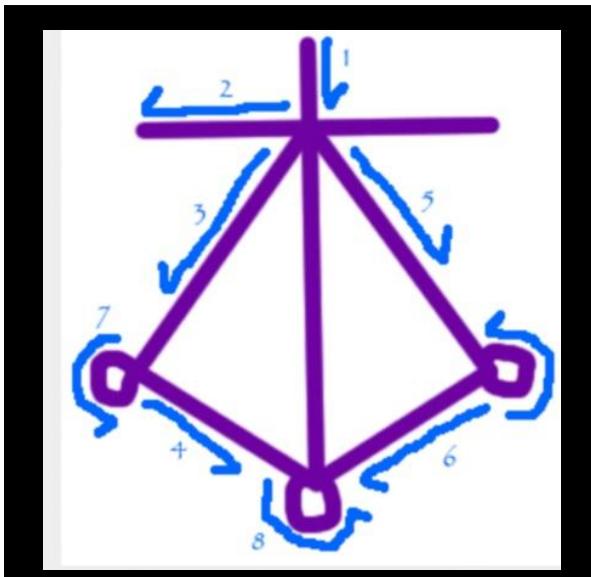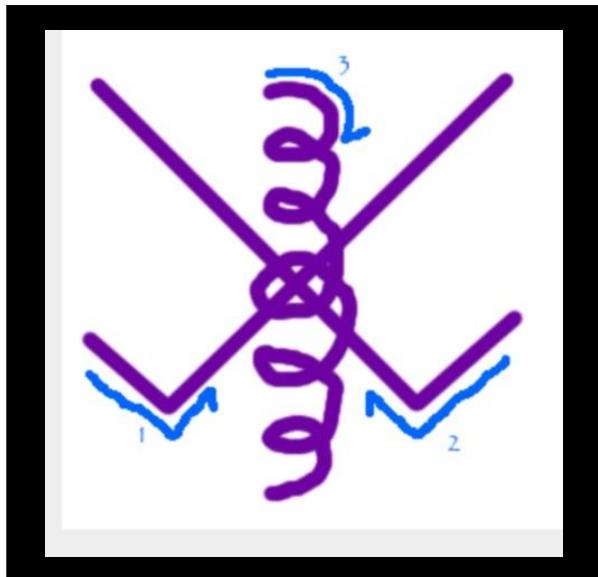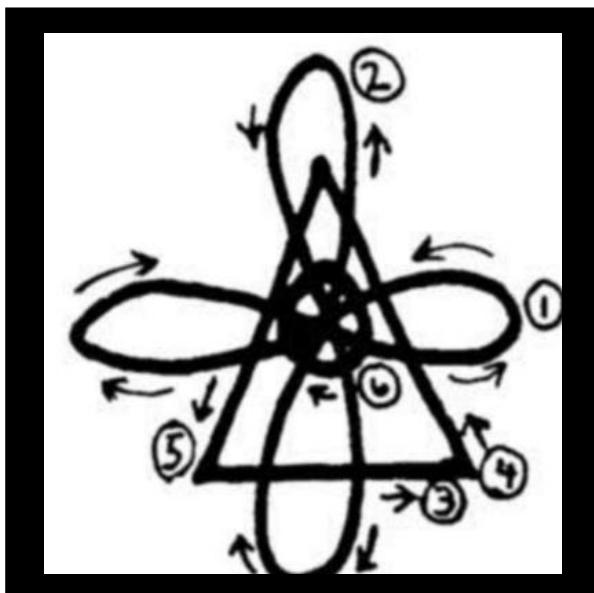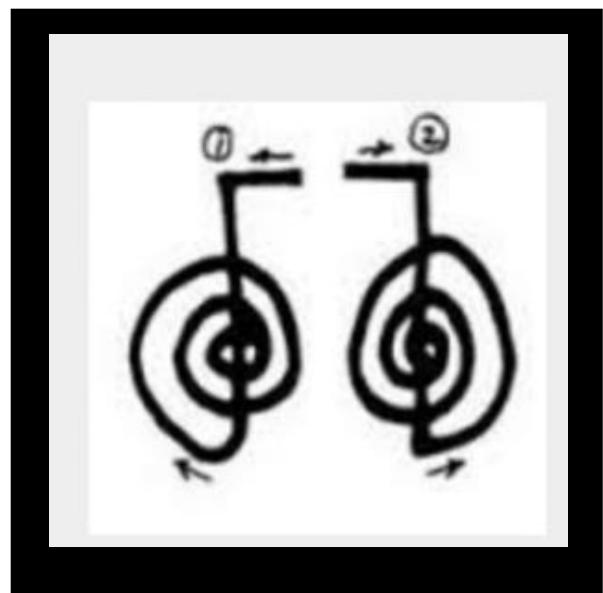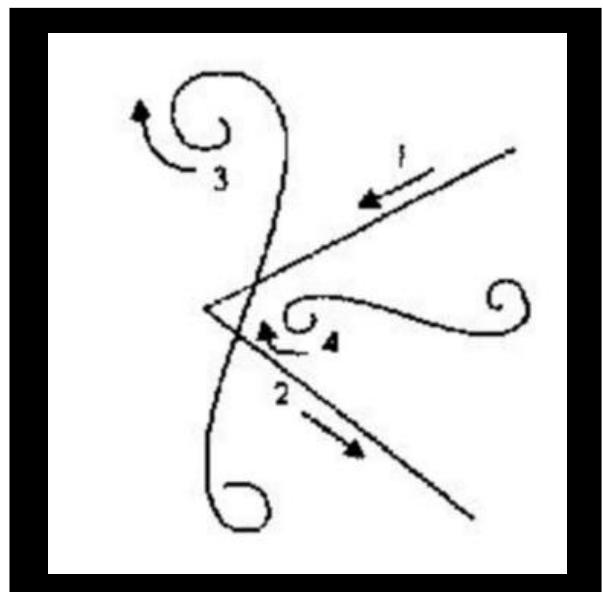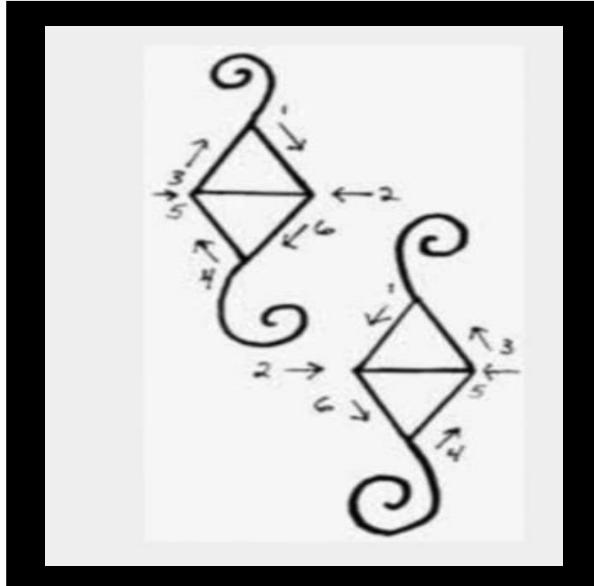
हे!ईश्वर सबको सन्मति दे,आरोग्य दे, सबको सुख दे,आनंद और ऐश्वर्य दे,सबका भला कर,कल्याण कर,रक्षण कर और तेरा मीठा नाम मुख में निरंतर रहने दे।

दिव्य उपहार

जीवन में कुछ भी मुफत नहीं मिलता। सत्य भी यही है कि मानव सहज सुलभ उपलब्ध की कद्र नहीं करता है लेकिन सभी ऐसे नहीं होते हैं जो संजीदा है,जिज्ञासु हैं, जिमका ह्रदय दैवीय गुणों से भरा हुआ है एवं जो धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं यह उनके लिए है।

शक्तिपात संकल्प

मेरा यह संकल्प है कि प्रत्येक व्यक्ति जो धर्म के मार्ग पर है एवं दैवीय गुणों से युक्त है वह मेरे इस मैन्युअल को करुणा रेकी सीखने की चाह से पढ़ेगा उसे करुणा रेकी का शक्तिपात प्राप्त होगा और वह चैनल बन जाएगा। साथ ही उसे शिव संकल्प भी करना होगा तभी यह शक्तिपात काम करेगा।

शिव संकल्प

मैं ....पु.श्री................. आज अभी इस क्षण अपने माता–पिता,ईष्टदेव,गुरुजनो और ईश्वर को साक्षी मानकर यह संकल्प लेता हुँ कि इस शक्तिपात से प्राप्त करुणा रेकी का उपयोग धर्म के अनुसार मानवता के कल्याण के लिए ही करुँगा।

धन्यवाद। अब आप एक सफल करुणा रेकी हीलर हैं आपको करुणा रेकी से जुड़ने एवं उसका माध्यम बनने के लिए बधाई।

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद